अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष- 43, अंक- 06, 1-15 नवंबर 2019

आरे के जंगलों पर सरकार की कुल्हाड़ी

4 मार्च 1951

5 अक्टूबर 2019

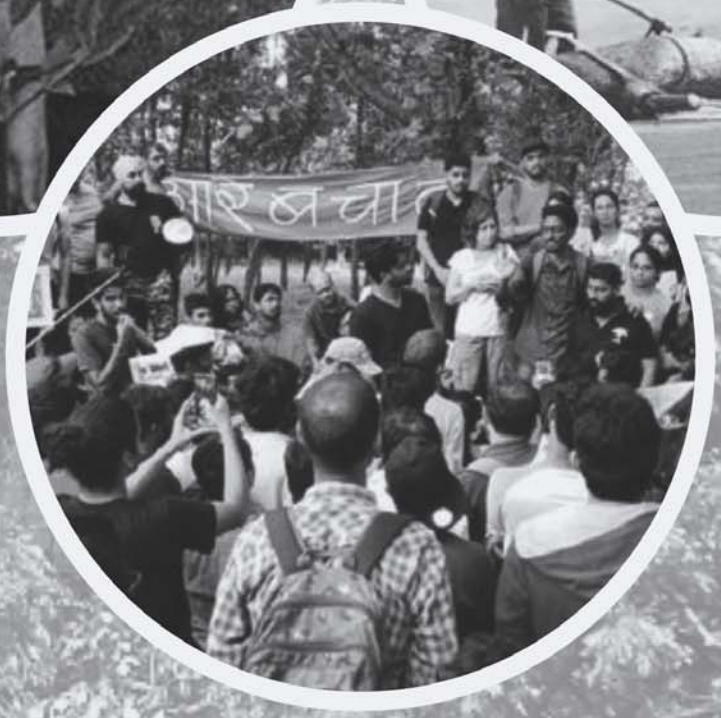

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 43, अंक : 06, 01-15 नवंबर 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. संकट में साबरमती आश्रम... 3
3. अभी गांधी की बात करना इसलिए जरूरी... 6
4. विदेशों में बापू के प्रति श्रद्धा... 8
5. गांधी का 'पांचवां बेटा' जिसने... 10
6. दक्षिण अफ्रीका में बापू की 150वीं जयंती... 12
7. आरे के जंगलों पर सरकार की कुल्हाड़ी... 14
8. हम गोडसे के नहीं, गांधी के साथ हैं... 16
9. वर्तमान परिस्थिति पर साहित्यकारों... 17
10. गतिविधियां एवं समाचार... 18
11. सर्वोदय दैनन्दिनी : 2020... 20

संपादकीय

गांधी-जेपी परम्परा को आगे बढ़ायें

गांधीजी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई में दो विशिष्ट क्रांतिकारी तत्त्वों का उदय हुआ। एक सत्य एवं अहिंसा के सक्रिय व सगुण रूप की स्थापना के लिए सत्याग्रह एवं वैकल्पिक रचना का सतत् प्रयोग। दूसरा यह कि परिवर्तन की शक्ति, लोक की शक्ति से आनी चाहिए तथा परिवर्तन का माध्यम लोक की सक्रिय भागीदारी होना चाहिए। इन दोनों की सक्रियता एवं गहनता के लिए यह भी आवश्यक था कि लोक को बांटने वाली सभी शक्तियों को क्षीण किया जाये तथा शोषणकारी-दोहनकारी तत्त्वों को लोक के दायरे से बाहर किया जाये। लोकसत्ता परिवर्तन की वाहक बने इस बात को ध्यान में रखते हुए ही गांधीजी ने आजादी पाने के बाद कांग्रेस को भंग करने की बात की थी। ताकि राजसत्ता के माध्यम से जो परिवर्तन करना चाहते हैं, वे अलग हो जायें तथा लोकसत्ता के माध्यम से जो परिवर्तन करना चाहते हैं, वे एक लोकसेवक संघ बना लें।

किन्तु आजादी की लड़ाई के दौरान ये धारा जितनी मजबूत हुई थी, आजादी के बाद यह उतनी ही कमजोर होती चली गयी। राजसत्ता के माध्यम से जो परिवर्तन करना चाहते थे, वे जाने-अनजाने केन्द्रीकरण की शक्तियों को मजबूत करते गये तथा लोकसत्ता के माध्यम से परिवर्तन को प्रतिबद्ध धारा को कमजोर करते गये, उसे हाशिये पर ढकेलते चले गये।

भारत में अंग्रेजी शासन, उपनिवेशवादी साम्राज्यवाद का हिस्सा था। उपनिवेशी साम्राज्यवाद स्वयं में पूंजी के वर्चस्व को बढ़ाने तथा श्रम के शोषण व संसाधनों के दोहन का माध्यम था। शोषण व दोहन का जो कार्य उपनिवेशवादी साम्राज्यवाद के अंतर्गत हो रहा था, वह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 'विकास' के नाम पर जारी रहा। इस 'विकास' के लिए अंततः पूंजी व बाजार के वैश्वीकरण की ओर हम बढ़ते चले गये।

जे. पी. के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति आंदोलन उन मूल्यों एवं शक्तियों की पुनर्स्थापना के लिए था, जिनका हमने ऊपर जिक्र किया है। अर्थात् (1) सत्याग्रह एवं वैकल्पिक रचना को एक प्रभावी शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए; (2) लोकसत्ता को परिवर्तन की शक्ति का स्रोत बनाने तथा परिवर्तन का वाहक बनाने के लिए; (3) लोक एकता में बाधक बनने वाली सभी शक्तियों को निष्प्रभावी करने के लिए तथा (4) श्रम के शोषण व संसाधनों के पूंजीवादी दोहन को खत्म करने के लिए।

सन् 1960-65 आते-आते यह स्पष्ट हो गया था कि कांग्रेस पार्टी को भंग न करना एक बड़ी भूल थी। क्योंकि राजसत्ता, नौकरशाही के माध्यम से केन्द्रीय स्तर पर तय की गयी नीतियों का पालन करवाती थी। जो कांग्रेसी कार्यकर्ता, आजादी के आंदोलन के दौरान, नये समाज को बनाने के लिए जनता में काम करते थे, अब उनके सामने सवाल था कि जनता के बीच क्या काम करें। लोकसत्ता के निर्माण का काम विपक्ष ने भी नहीं किया। ऐसे में जेपी के नेतृत्व में चला आंदोलन, उस धारा को पुनः मजबूत करने का था, जिसमें कार्यकर्ता जनता के बीच काम करें, लोकशक्ति व लोकसत्ता का निर्माण करें। और इसके लिए सत्याग्रह व वैकल्पिक रचना के काम को उन्होंने नया आयाम दिया। जेपी क्रांति शोधक थे, इसलिए उन्होंने उन बुनियादी मूल्यों की पुनर्प्रस्थापना में नये प्रयोग किये तथा उन्हें नये आयाम दिये।

यह संपूर्ण क्रांति आंदोलन का ही प्रभाव था कि सन् 1980 के बाद देश भर में अधिकांश परिवर्तनकारी आंदोलन, पार्टियों के दायरे के बाहर हुए, और मोटे तौर पर शांतिमय रहे। लोगों में भी पार्टी के दायरे के बाहर होने वाले आंदोलनों की स्वीकार्यता बढ़ी है, साथ ही शांतिमय एवं शुद्ध साधन की स्वीकार्यता भी बढ़ी है। जो बीज संपूर्ण क्रांति आंदोलन के दौरान बोये गये थे, वे जेपी के प्रयास के 40 वर्षों के बाद आज भी दिशा-निर्देश का काम कर रहे हैं। राजसत्ता आजादी के बाद जन-विरोधी भी होती गयी तथा लोकसत्ता के निर्माण में बाधक भी। आज की राजसत्ता का चरित्र और अधिक क्रूर, दमनकारी व जन-विरोधी है। वह पूंजी वर्चस्ववादी-कारपोरेटी शक्तियों के गठजोड़ से चल रही है। राजसत्ता विरोधी (निरपेक्ष नहीं) एक व्यापक जन उभार द्वारा लोकसत्ता के निर्माण के कार्य हेतु जन-आंदोलनों को पुनः खड़ा करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता व चुनौती है।

–बिमल कुमार

संकट में साबरमती आश्रम

❑ महादेव विद्रोही

महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटे। यहां उन्होंने अहमदाबाद के कोचरब गांव में 25 मई 1915 को आश्रम की स्थापना की। यह स्थान गांधीजी के प्रयोगों के लिए छोटा था तथा वहां प्लेग फैल गया था। अतः गांधीजी ने अहमदाबाद शहर के बाहर साबरमती नदी के किनारे 17 जून 1917 को आश्रम की स्थापना की। 11 मार्च 1930 तक यह गांधीजी का मुख्यालय रहा। 12 मार्च 1930 को उन्होंने यहीं से अपने 79 साथियों के साथ ऐतिहासिक दांडी कूच का आरम्भ किया था। कूच से पहले बापू ने कहा था कि मैं कौए या कुत्ते की मौत मरूंगा पर जबतक आज़ादी नहीं मिलेगी, तबतक आश्रम नहीं लौटूंगा। उसके बाद वे कभी लौटकर आश्रम नहीं आये।

इस आश्रम में उन्होंने अपने अनेक प्रयोग किये। खादी की शुरुआत उन्होंने यहीं से की। खादी के प्रयोग के लिए वे सौराष्ट्र से बुनकरों को ले आये थे।

आश्रम के बीच से शहर की मुख्य सड़क 'आश्रम मार्ग' गुजरने के कारण आश्रम दो भागों में विभक्त हो गया है। गांधीजी के सहयोगियों काका कालेलकर, महादेव देसाई, पंडित खरे, नरहरी परीख आदि कार्यकर्ताओं के निवास सड़क की दूसरी ओर चले गये हैं पर अभी भी यह आश्रम का ही भाग है।

पिछले दिनों अहमदाबाद के समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ कि आश्रम को 'वर्ल्ड क्लास' बनाने के लिए सरकार 32 एकड़ जमीन को खाली करायेगी। जिन जगहों को खाली कराने की बात है, उसमें सर्व सेवा संघ द्वारा स्थापित खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति, गुजरात खादी ग्रामोद्योग मंडल, साबरमती आश्रम, गौशाला, कार्यकर्ता निवास, उत्तर बुनियादी विद्यालय, पी. टी. सी. कॉलेज आदि अवस्थित हैं।

इस योजना के कारण पीढ़ियों से रह रहे 200 परिवारों को वहां से स्थानांतरित कर आश्रम के बगल में अवस्थित झोपड़पट्टी में गटर

के किनारे ले जाने की योजना है। यह सब अत्यंत गुप्त रूप से किया जा रहा है। इस विषय पर कभी भी आश्रमवासियों के साथ कोई चर्चा नहीं की गयी।

दिनांक 20.09.2019 को खादी ग्रामोद्योग आयोग की ओर से साबरमती आश्रम के आसपास अवस्थित संस्थाओं को एक पत्र लिखकर कहा गया है कि –

''.. .. .. भारत के माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित कमिटी में यह निर्णय लिया गया है कि पूज्य महात्मा गांधी की जयंती के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गांधी आश्रम, अहमदाबाद का विस्तार बढ़ाया जाय एवं साबरमती आश्रम को ***वर्ल्डक्लास*** *मेमोरियल के रुप में तैयार किया जाय। इस कार्य में गुजरात सरकार तथा अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन की भी जिम्मेवारी तय की गयी है।''*

''...आपसे आग्रह है कि आपकी संस्था की साबरमती आश्रम विस्तार क्षेत्र में स्थित सभी जमीन/मकान–स्थायी संपत्ति को इस वर्ल्ड क्लास गांधी मेमोरियल के लिए सरकार को सौंप दें, जिसके एवज में आपकी संस्था को उपयुक्त जमीन/मुआवजा देने का प्रावधान है।

अतः उक्त बैठक के क्रम में आपसे आग्रह है कि आपकी संस्था की साबरमती आश्रम विस्तार क्षेत्र स्थित सभी संपत्ति को इस कार्य के लिए हस्तांतरण हेतु संस्था की कमिटी में पास करके संलग्न फार्म में इस कार्यालय को तुरंत भिजवायें।''

इस पत्र के साथ एक फॉर्म संलग्न किया गया है जो इस प्रकार है –

"We the trustees of the… (Name and address of the institution). Hereby declare that we are in possession of land and buildings situated in survey No. ... admeasuring…Sq Mtr. belongs to our trust.

We hereby declare that we are ready to handover the above said land and property to...for the development of proposed World class Gandhi Memorial, provided that adequate land and compensation is given to our Trust for the redevelopment of our activities."

27 सितम्बर 1957 को सर्व सेवा संघ की मैसूर की बैठक में खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति के नाम से एक संस्था रजिस्टर्ड कराने का निर्णय लिया गया एवं श्रीकृष्णदास गांधी को इसका संयोजक नियुक्त किया गया। इस कार्य के संचालन के लिए उन्होंने 10 लाख रूपये की पूंजी दी और अगले 5 साल तक हर साल एक लाख रूपये भी दिये।

सर्व सेवा संघ ने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम के पास 5.12.1957 को श्री प्रमुखलाल भोगीलाल पटेल से 17 एकड़ जमीन खरीदी। 26 अप्रैल 1961 को खादी ग्रामोद्योग समिति का रजिस्ट्रेशन कराया गया। इस जमीन को सर्व सेवा संघ ने खादी ग्रामोद्योगों के प्रयोग के लिए खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति को दिया। प्रयोग समिति के विधान के अनुसार इसमें ट्रस्टी की कोई जगह खाली होने पर उस स्थान की पूर्ति सर्व सेवा संघ करेगा।

वर्ल्डक्लास के नाम पर सरकार का क्या करने का इरादा है, यह समझ में नहीं आ रहा है। पूरी दुनिया के लिए बापू का साबरमती का

'हृदयकुंज' एवं सेवाग्राम की 'बापू कुटी' वर्ल्डक्लास से भी बड़े हैं। दुनिया भर से लोग यहां बापू की सादगी देखने के लिए आते हैं। चमक-दमक तो दुनिया में बहुत है। उसे देखने के लिए साबरमती आने की ज़रूरत नहीं है। आश्रम को आश्रम ही रहने देना चाहिए। इसे महलनुमा बनाने की कल्पना दिवालियेपन की निशानी लगती है। अगर सरकार को नया कुछ करना है तो किसी नई जगह करे, आश्रम के साथ छेड़छाड़ अनुचित है। खादी और ग्रामोद्योग बापू के 18 रचनात्मक कार्यों में से एक है। इसे यहां से हटाना आश्रम की हत्या करने जैसा होगा। आश्रम को तथाकथित रूप से वर्ल्ड क्लास बनाने का प्रस्ताव अनेक शंकाओं को जन्म देता है।

पिछले दिनों ऐसी कुछ और घटनाएं घटी हैं, जिनसे हमारी शंकाओं को बल मिला है। कुछ महीने पूर्व इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामीन नेतनयाहू साबरमती आश्रम में पधारे थे। उन्हें हृदयकुंज में बापू के आसन पर बिठाया गया। यह आसन दुनिया के लिए एक पवित्र स्थान है। आजतक इस आसन पर और कोई नहीं बैठा। किसी दूसरे को बिठाकर इसे अपवित्र करा दिया गया।

अभी-अभी 2 अक्तूबर को बापू के 150वें जन्मदिन पर प्रधानमंत्री मोदी आश्रम में आये थे। आश्रम के बाहर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प एवं दूसरों के बैनर लगाये गये थे। गांधी के जन्म दिन पर आश्रम में इनके बैनर लगाने का मतलब है कि उनके लिए गांधी नहीं, ट्रम्प महत्वपूर्ण हैं। ये सारे बैनर न सिर्फ सरकार ने बल्कि भारतीय जनता पार्टी ने भी लगाये थे। कई बैनरों में श्री मोदी का कद गांधी से बड़ा था। तो कई बैनरों में गांधी का नामोनिशान तक नहीं था। इन बैनरों को देखकर आश्रम के बाहर की सड़क से गुजरने वाले लोगों को शायद ही लगा होगा कि यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का आश्रम है। आश्चर्य तो इस बात का है कि आश्रम ने भी इस पर कोई आपत्ति नहीं जतायी और पोस्टर लगने दिये। 2 अक्तूबर के 20 दिन बीत जाने के बाद भी जब यह लिखा जा रहा है, तब आश्रम के मुख्य द्वार पर श्री मोदी की तस्वीर वाला विशाल बैनर लगा ही हुआ है। आश्रम को इसे हटाने की इच्छा या हिम्मत नहीं हुई।

लम्बे समय से गांधी पर हमले होते रहे हैं। गांधी की तस्वीर को गोली मारकर लहू बहाया गया, मिठाइयां बांटी गयीं और गांधी के हत्यारे की पूजा की गयी। गांधी की हत्या को वध तथा हत्यारे को राष्ट्रभक्त कहा गया। 2 साल पूर्व खादी ग्रामोद्योग आयोग की डायरी एवं कैलेन्डर से गांधी की तस्वीर को हटाकर मोदी की तस्वीर छाप दी गयी। आयोग के अध्यक्ष द्वारा कहा गया कि मोदी खादी के सबसे बडे ब्रान्ड एम्बेसेडर हैं। सत्ताधारी पक्ष के मंत्रियों, सांसदों आदि द्वारा अनेकों बार गांधी के बारे में अपमानजनक टिप्पणियां की जाती रही हैं, पर प्रधानमंत्री हमेशा इस पर मौन रहे हैं। इसमें हरियाणा के मंत्री श्री अनिल विज का नाम सबसे आगे है। जब 2017 में खादी ग्रामोद्योग आयोग की डायरी पर बापू के तस्वीर की जगह मोदी की तस्वीर छापी गयी। तब श्री विज ने कहा – ''महात्मा गांधी के नाम से खादी का कोई पेटेंट नहीं है। गांधी का नाम खादी से जुड़ने से खादी डूब गयी। गांधी के मुकाबले प्रधानमंत्री बेहतर ब्रान्ड नेम है। जिस दिन से भारतीय रुपये के नोटों पर गांधी की फोटो लगायी जा रही है, उस दिन से रूपये की कीमत कम हो गयी है। धीरे-धीरे नोटों पर से भी गांधी की तस्वीर हटा दी जायेगी।'' (अमर उजाला : चंडीगढ़, 10 मार्च 2017)

साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल गीत पर इस श्रीमान ने अपनी टिप्पणी करते हुए इसे शहीदों का अपमान बताया। ऐसा एक भी अवसर नहीं आया जब प्रधानमंत्री ने इस कृत्य की तथा इस कृत्य में शामिल लोगों एवं इस विचारधारा के खिलाफ एक शब्द भी बोला हो। श्री मोदी जिस विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं वह गांधी के विचार से पूर्णतः विपरीत है। अभी-अभी भाजपा ने घोषणा की है कि वह अंग्रेजों से माफी मांगनेवाले सावरकर को भारतरत्न देगी।

हृदय कुंज : साबरमती आश्रम

लोकसभा के पिछले चुनाव के समय भोपाल से भाजपा की उम्मीदवार साध्वी(?) प्रज्ञा सिंह ठाकुर का गांधी विरोधी बयान सब जानते हैं। आज तक उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गयी। इसका अर्थ है कि भाजपा का नेतृत्व उनके बयान से खुश था।

1945 में नारायण आपटे एवं नाथूराम गोडसे द्वारा 'दैनिक अग्रणी' नाम से एक अखबार प्रकाशित किया जाता था। इसमें यह कार्टून प्रकाशित हुआ है –

इस चित्र में आप देखेंगे कि गांधी को राक्षस के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके 10 सिरों में नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरु, मौलाना आजाद, चकवर्ती राजगोपालाचारी आदि को बताया गया है और उन पर सावरकर तथा श्यामाप्रसाद मुखर्जी तीर चला रहे हैं। तीर पर 'अखंड भारत' लिखा हुआ है। नफरत और हिंसा की राजनीति उनके लिये नयी नहीं है। इसी प्रधानमंत्री ने 'वर्ल्डक्लास' के अपने सपने को साकार करने के लिए स्टेच्यू ऑफ यूनिटी और गांधी नगर में महात्मा मंदिर के नाम पर क्या तमाशा किया है, यह दुनिया के सामने है। अब साबरमती आश्रम की बारी है। ऐसी चर्चा है कि अगली बारी गुजरात विद्यापीठ और सेवाग्राम आश्रम की है।

गांधी किसी की मेहरबानी के मोहताज नहीं कि कोई उनके आश्रम को 'वर्ल्डक्लास' बनाये। गांधी की कुटिया वर्ल्डक्लास से भी बड़ी है। इसीलिए दुनियाभर के लोग यहां अपना मत्था टेकने आते हैं। आश्रम को 'वर्ल्डक्लास' बनाने के बहाने आने वाले दिनों में आश्रम का जो हश्र होगा, इसकी कल्पना कोई सहज ही कर सकता है। सरकार के ये कदम गांधी तथा उनके इतिहास को मिटाने की योजना प्रतीत होती है।

17 अक्तूबर 2019 को टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार केन्द्र सरकार ने साबरमती आश्रम के पुनरोद्धार तथा उसे नये ढंग से विकसित करने के लिए 287 करोड़ रुपये की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की है।

सबसे आश्चर्य की बात यह है कि साबरमती आश्रम के किसी भी ट्रस्टी ने आज तक इस तथाकथित विकास के बारे में कोई आपत्ति दर्ज नहीं करायी। कुछ लोगों द्वारा इस संबंध में पूछे जाने पर वे लोग सारी बातों को झूठा बताते रहे हैं पर इस योजना के बारे में समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों का कभी खंडन भी नहीं किया। इसके विपरीत उनमें से कइयों ने इस बात पर अपनी खुशी भी व्यक्त की है, जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है।

साबरमती आश्रम संग्रहालय का उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के वरदहस्त से अशोक का एक पेड़ लगा कर हुआ था। वहां इस आशय का एक बोर्ड भी लगा हुआ था। पिछले दिनों मोदी के आश्रम आने पर उस बोर्ड को हटा दिया गया।

आश्रम की चित्र प्रदर्शनी में सरकार की विविध योजनाओं के पैनल लगाये गये हैं। साबरमती आश्रम के इतिहास में यह पहली घटना है। समझ में नहीं आ रहा है कि यह बापू का आश्रम है या सरकारी आश्रम!

1 अप्रैल 1960 को साबरमती आश्रम में गुजरात राज्य की स्थापना का समारोह जमीन पर बैठकर सर्वोदय नेता श्री रविशंकर महाराज के हाथों से हुआ था। गुजरात में यह परम्परा है कि जब भी कोई राज्यपाल या मुख्यमंत्री शपथ ग्रहण करते हैं, उसके ठीक पहले या बाद में साबरमती आश्रम जाकर बापू को नमन करते हैं। श्री नरेंद्र मोदी ने इस उच्च परम्परा को तोड़ दिया। उनके बाद उनके अनुगामी मुख्यमंत्री भी उनके इस कदम का अनुसरण करते रहे। क्या उनसे यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे गांधी की विरासत को आगे बढ़ायेंगे?

आश्रम के उद्देश्यों में बापू ने लिखा है, ''जगतहित की अविरोधी देश सेवा करने की शिक्षा लेना और ऐसी देश सेवा करने का सतत प्रयत्न करना इस आश्रम के उद्देश्य हैं''। अब जगतहित तो दूर, जनहित का विरोध करना, जनहित को समाप्त करना और सरकार के सुर में सुर मिलाना ही इसका उद्देश्य बनता दिख रहा है।

आश्रम दुनिया के करोड़ों लोगों की श्रद्धा एवं आस्था का स्थान है। इसे पर्यटक स्थल बनाने से इसकी गरिमा समाप्त हो जायेगी। गांधी की आत्मा यहां से निकलकर कहीं और चली जायेगी। बापू जब सेवाग्राम आये तब सेवाग्राम आश्रम को बनाने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि इसके निर्माण में 100 रुपये से अधिक खर्च नहीं होना चाहिए और ऐसी किसी चीज का उपयोग नहीं होना चाहिए जो 25 कि.मी. से अधिक दूर से आयी हो। अब सरकार उसी गांधी के आश्रम को चकाचौंध से भर देगी। क्या ऐसी जगह गांधी रहेगा? ❑

अगला सर्वोदय समाज सम्मेलन

सर्वोदय समाज का अगला सम्मेलन दिसम्बर 2019 में नागपुर में करना तय हुआ था पर कुछ अपरिहार्य कारणों से इसकी तिथि में परिवर्तन करना पड़ा है।

17 अक्तूबर 2019 को नागपुर के सर्वोदय आश्रम में गांधीजी की सहयोगी श्रीमती लीलाताई चितले की अध्यक्षता में सर्वोदय समाज सम्मेलन स्वागत समिति की बैठक हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि 48वां सर्वोदय समाज सम्मेलन **9 से 11 अक्तूबर 2020** को नागपुर में होगा। इससे पहले वहां एक युवा शिविर होगा। साथ ही अलग-अलग स्कूल-कॉलेजों में छात्रों के बीच विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

बैठक में सोशल मीडिया पर गांधी के विरुद्ध किये जा रहे दुष्प्रचारों का उपयुक्त जवाब देने तथा इसके लिए एक टीम बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। स्वागत समिति की अगली बैठक नवम्बर 2019 में होगी, जिसमें अलग-अलग जिम्मेवारियां निर्धारित की जायेंगी।

–महादेव विद्रोही, अध्यक्ष, ससेसं

अभी गांधी की बात करना इसलिए ज़रूरी है

❑ रमाशंकर सिंह

आज हमारे सामने ऐसे नेता हैं जो केवल तीन काम करते हैं—वे भाषण देते हैं, उसके बाद भाषण देते हैं और फिर भाषण देते हैं. सार्वजनिक राजनीति से कथनी और करनी में केवल कथनी बची है. गांधी उस कथनी को करनी में तब्दील करने के लिए ज़रूरी हैं.

भारत के इतिहास में कई महापुरुष हुए हैं जिनके होने के 100, 150 या 500 वर्ष जब पूरे हुए तो उनकी वैचारिक और व्यक्तिगत जीवन यात्रा के जश्न मनाए गए. आजाद भारत में महात्मा बुद्ध, जवाहरलाल नेहरू, डॉ आंबेडकर और डॉ. लोहिया के जन्म के अवसरों को इसी तरह से मनाया गया.

गौरतलब है कि दिखावे और कर्मकांड के बीच आज भी गांधी पर न केवल गंभीर बातचीत हो रही है, उन पर किताबें और जीवनियां लिखी जा रही हैं, बल्कि वे भारत सहित दुनिया के कमजोर और मजलूमों की आवाज बन रहे हैं. वे उन लोगों की आवाज बन रहे हैं जो सत्ताविहीन हैं, गरीब हैं और जिनके सामने टैंक और बंदूकें ताने हुए शक्तिशाली राज्य खड़ा है.

गांधी की आजमाई हुई रणनीतियों से सत्ताएं बदल दी जा रही हैं. अभी जनवरी 2018 में दिवंगत हुए अमेरिकी प्रोफेसर ज्यां शार्प ने अपने अहिंसक संघर्षों से शक्ति के मद में चूर कई सरकारों का घमंड तोड़ा था. ज्यादा दूर न जाइए, भारत में सिद्धराज ढड्ढा, मेधा पाटकर और बनवारीलाल शर्मा जैसे व्यक्तियों को ले लीजिए या तमिलनाडु के किसानों के विरोध को ले लीजिए. भारत के किसी भी प्रांत में चले जाइए, राजभवनों और मुख्यमंत्रियों के कार्यालयों के आसपास कमजोर और गरीब लोग सरकार का विरोध करते मिल जाएंगे. 1920 से लेकर अब तक ऐसा कोई वर्ष नहीं गुजरा है जब विद्यार्थियों का एक बड़ा हिस्सा गांधीवादी तरीके से जेल न भरता रहा हो.

गांधी की ही बात क्यों?

यह लेख इसी सवाल का जवाब देना चाहता है. क्योंकि गांधी ने जो भी कमजोर था, सत्ता और समाज से भयभीत था, उसे निर्भय बनाया. गांधी ने ऐसे लोगों की आत्मा से भय निकाल दिया जो अंग्रेजी शासन, उसकी पुलिस और सीआईडी से डरते थे. भारतीय लोग राजा तो क्या, उसके कारिंदों तक से डरते थे. सामंतवाद को पाल-पोस रहे देश में गांधी ने दबंगों, प्रभावशाली लोगों और पुलिस का भय आम जनता के बीच से निकाल दिया.

1916 में बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में दिए गए उनके भाषण को याद कीजिए जिसमें उन्होंने भारतीय राजे-महाराजाओं के सामने ही उनको लताड़ लगाई थी. मेरी जानकारी में भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब किसान से दिखने वाले किसी व्यक्ति ने सूटेड-बूटेड और हीरे जवाहरात से लदे भारतीय अभिजात्य वर्ग की खुली निंदा की.

इसी भाषण में उन्होंने भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज की खिंचाई की और कहा कि वे अपने पुलिस बल के द्वारा जनता के बीच भय स्थापित करना चाहते हैं जबकि वायसराय अंदर से खुद डरे हुए हैं. ऐसे डरे हुए व्यक्ति का मर जाना ही श्रेयस्कर है. यह गांधी वायसराय के लिए कह रहे थे!

आप देखिए कि गांधी इसे अपने पिछले एक वर्ष के अनुभव के आधार पर भारतीय लोगों से साझा कर रहे रहे थे कि डरी हुई तो सरकार है तो फिर किसान और विद्यार्थी क्यों डरे हुए हैं? उन्हें नहीं डरना चाहिए. गांधी जानते थे कि यह निडरता ही भारतीय जनों को आजादी दिलाएगी.

भय से मुक्ति ही आजादी है

आज से लगभग सौ वर्ष पहले गांधी ने जो किया, उसके लिए गांधी को याद किया जाना चाहिए. यह निर्भय-भाव आज का कोई राजनेता देने में सक्षम नहीं है कि वह अपने लोगों से कहे कि उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं है. उल्टे सरकारें और उनकी पुलिस नागरिकों को लगातार डराती रहती हैं. यह आजादी के बाद से अब तक बदस्तूर जारी है.

लोगों को डराकर रखने और उन पर पहरा लगाने की औपनिवेशिक परियोजना को दक्षिण एशिया की सरकारों ने न केवल बनाए रखा बल्कि उसकी व्यापकता और गहनता भी बढ़ा दी है. यदि हम दुनिया का बेहतरीन लोकतंत्र चाहते हैं तो उसके लिए एक निर्भीक नागरिकता की दरकार होगी. और इसके विकास के लिए गांधी जरूरी हैं.

गांधी हमारे उस समय के लिए जरूरी हैं जिसमें हम रह रहे हैं और कल प्रवेश कर जाएंगे. गांधी से पहले 1857 के विद्रोह ने और दादाभाई नौरोजी तथा उनके समकालीनों ने स्पष्ट कर दिया था कि भारत अंग्रेजों का गुलाम बन चुका है. 1909 में गांधी ने अपनी छोटी सी किताब 'हिंद स्वराज' में इस बात को साफ किया कि भारत कैसे गुलाम है और उससे मुक्ति कैसे पाएगा. इस गुलामी से निजात पाने के लिए गांधी ने रास्ते खोजे. यह रास्ता अहिंसा का था, जिसने भारत की आजादी की लड़ाई को आगे ले जाने के साथ-साथ उसके नजरिये और प्रतिमानों को संवारने का काम किया.

वास्तव में भारत की आजादी की लड़ाई एक ही समय में ब्रिटेन से मुक्ति पाने के साथ ही साथ, एक अच्छा मनुष्य बनाने का संघर्ष भी थी जिसकी बेहतरीन शुरुआत गांधी ने की. यूरोप में धर्म और राज्य के चंगुल से मनुष्य की मुक्ति की खोज नवजागरण के दौर में की गयी थी लेकिन गांधी के नेतृत्व में राज्य के चंगुल से मुक्त लेकिन धार्मिक मनुष्य की परिकल्पना गांधी के अंतर की खोज थी.

उन्होंने भारतीय मनीषा को बहुत ध्यान से देखा था और पाया कि भारतीय मनुष्य को लालच, हिंसा और भय से मुक्त किया जा सकता है लेकिन उसे धर्म से मुक्त नहीं किया जा सकेगा. उन्होंने कमजोर समझे जाने वाले भारतीयों की कल्पना में पंख लगा दिए और बंदूक और तोप बनाने वाले अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया.

श्रीलंका की सीमा को छूते तमिल

मछुआरों के गांव हों या युसुफजाई कबीले के लड़ाकू पठान, गांधी ने अत्याचारी से लड़ने का एक सलीका सिखाया जिसके कारण अहिंसक और घृणा विहीन आजादी का आंदोलन चला. इस दौरान जिन समूहों ने शुरुआती दौर में हिंसा अपनायी, उन्होंने एक समय के बाद गांधीवादी अहिंसक रास्तों में ही अपनी गुंजाइश तलाशी.

घृणा और हिंसा के बीज को गांधी ने औपनिवेशिक लालच, पूंजीवाद के विस्तार और अंधी औद्योगिक प्रगति में देखा और कहा कि जब भारत को आजादी मिलेगी तो उसे इनसे भी आजादी मिलेगी. किन्तु ऐसा नही हुआ. और अगर ऐसा नहीं हुआ तो उसके परिणाम हमारे सामने हैं.

ब्रेख्त ने गैलीलियो के जीवन पर एक नाटक लिखा था. इस नाटक में एक संवाद आता है कि दुर्भाग्यशाली है वह देश जिसे नायकों की जरूरत होती है. इसका आशय यह है कि नायक पूजा की परंपरा बुद्धि-विवेक विहीन भीड़ पैदा करती है, जबकि किसी समाज को अपना शासन चलाने के लिए स्वतंत्र सोच का मालिक होना चाहिए.

जब भारत को ब्रिटिश शासन ने गुलाम बनाया तो उसने तर्क दिया भारतीय जनों में अपनी शासन पद्धति विकसित करने की क्षमता नहीं है, वे खुदमुख्तार नहीं हो सकते. गांधी ने इस विचार को सिरे से खारिज कर दिया. 1909 में उन्होंने गुजराती में 'हिंद स्वराज' नामक एक पतली पुस्तक लिखी. इसमें उन्होंने कहा कि भारत को उन नियामतों से किनारा कर लेना चाहिए जो ब्रिटिश शासन की देन समझी जातीं हैं, मसलन वकील और कचहरी.

इसके स्थान पर उन्होंने भारतीयों से खुद का शासन चलाने की बात कही. लगभग बीस वर्ष बाद वे काफी लोकप्रिय हो चुके थे और भारत की आजादी की लड़ाई का मुख्य चेहरा बन चुके थे. इसी दौर में उन्होंने ब्रिटिश शासन की हुक्मउदूली के लिए नमक कानून तोड़ा.

गुजरात के नवसारी जिले में दांडी के समुद्रतट पर उन्होंने कहा—'यह लड़ाई किसी एक मनुष्य की नहीं, करोड़ों की है. यदि तीन-चार आदमी ही लड़कर स्वराज प्राप्त कर सकते हों तब तो देश की शासन-सत्ता भी उन तीन-चार आदमियों के हाथ में चली जाएगी. अतः स्वराज की इस लड़ाई में तो करोड़ों आदमियों को अपना बलिदान देकर ऐसा स्वराज्य हासिल करना है, जो करोड़ों के लिए लाभदायी हो.'

यह सही वक्त है कि गांधी को याद किया जाय और अपने आपसे पूछा जाय कि देश की सत्ता कुछ हाथों में क्यों सिमटकर रह गयी है?

मेरी पीढ़ी के गांधी

जिसे सलमान रश्दी आधी रात की संतानें कहते हैं, उसने तो गांधी के बारे में अपने माता-पिता और आसपास के लोगों से सुना और समझा था. उनमें से कुछ ने गांधी के उन मूल्यों को अपनाने की कोशिश की जिसके लिए वे जिए और मरे.

1980 के बाद जन्मी मेरी पीढ़ी ने गांधी को किताबों और फिल्मों के जरिये जाना-समझा है. जो लोग जागरूक और राजनीतिक रहे हैं, उन्होंने उनकी तलाश भारत के विभिन्न भागों में चलने वाले आंदोलनों में की. गांधी कश्मीर, से लेकर कन्याकुमारी तक और अरुणाचल से लेकर गुजरात तक हर शहर में संघर्षरत और पुलिस की लाठी खाती आम जनता में दिखते हैं।

उन्होंने गांधी को शहर के कोतवाल के ऑफिस के बाहर लाठी खाते हुए देखा है. मेरी उम्र के कुछ लोग उन लोगों के बीच जाकर उनका हाथ पकड़कर खड़े हो जाते हैं. गांधी ने उन्हें निर्भय बनाया है.

अभी पिछले वर्ष प्रकाशित हुई किताब 'व्हाई गांधी स्टिल मैटर्स' में राजमोहन गांधी एक वाकये का जिक्र करते हैं. अगस्त 1946 में मोहम्मद अली जिन्ना ने भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिमों से सीधी कार्रवाई में भाग लेने को कहा. थोड़ी साफ भाषा में कहें तो उन्होंने पाकिस्तान की प्राप्ति के लिए साधनों की परवाह न करते हुए लोगों को हिंसा के लिए उकसाया. दंगे हुए. लोगों के घर जला दिए गए और औरतों का बलात्कार हुआ, जो आने वाले दो वर्षों के लिए रेडक्लिफ रेखा के दोनों ओर की सच्चाई बन गया.

अविभाजित बंगाल और बिहार जल उठा. इस हिंसा से बेहद खिन्न गांधी ने मार्च 1947 में बिहार का दौरा किया. उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि बड़ी संख्या में कांग्रेस के लोगों ने इस गड़बड़ी में भाग लिया या नहीं. आपकी 132 सदस्यीय कमेटी के कितने लोग इसमें संलिप्त थे? मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि किसी 110 वर्ष की बूढ़ी महिला को अपनी आंखों के सामने बोटी-बोटी काटे जाते हुए देखकर तुम कैसे जिंदा रह सकोगे? न तो मैं आराम करूंगा और न किसी को करने दूंगा. मैं पैदल ही पूरा बिहार घूमूंगा और उन कंकालों से पूछूंगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था? जब देश को आजादी मिलने ही वाली थी, संविधान बनाया जा रहा था तब गांधी ने जो कहा, उससे बढ़कर लिखा और उससे भी बढ़कर किया. *(द वायर)* ❑

लेखक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फेलो हैं।

श्रद्धांजलि

रमेश शर्मा नहीं रहे

स्वतंत्रता सेनानी, असम सर्वोदय मंडल तथा असम भूदान ग्रामदान बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष रमेश शर्मा का 17 अक्तूबर 2019 को गुवाहाटी में निधन हो गया। वे अपनी तरुणाई काल में सर्वोदय आन्दोलन से जुड़े। विनोबाजी जब 1961-62 में असम की पदयात्रा पर थे, तब उन्होंने रमेश शर्मा को सूतांजलि अर्पित किया था। उनका जन्म असम के नलवाड़ी जिले में हुआ था। उनके निधन से सर्वोदय आन्दोलन की अपूरणीय क्षति हुई है।

सर्व सेवा संघ रमेश शर्मा को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा उनके परिवारजनों को अपनी संवेदनाएं प्रेषित करता है।

–महादेव विद्रोही, अध्यक्ष

सत्तर साल पहले

विदेशों में बापू के प्रति श्रद्धा

❑ श्रीमन्नारायण अग्रवाल

'वे हमारे भी थे'

गत छः महीनों के विश्व भ्रमण में हमें किसी भी देश में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जो बापू के नाम से भलीभांति परिचित न हो और उनके प्रति असीम श्रद्धा न रखता हो। हमारे पास गांधीजी के कुछ चित्र थे, जिन्हें देखते ही लोग खुश हो जाते थे। कहते थे—''महात्मा गांधी सचमुच एक महान पुरुष थे! वे हिन्दुस्तान के ही नेता नहीं थे! वे हमारे भी थे'' हम सभी देशों के देहातों में घूमे। खेतों में काम करते किसानों से मिले, सड़क के किनारे मेहनत करने वाले मजदूरों से मिले, लेकिन कोशिश करने पर भी कोई ऐसा स्त्री-पुरुष नहीं मिला जो उनके चित्र को देखकर ही बापू को न पहचान ले! बापू के जीवन-काल में ही उनका नाम सारे संसार में फैल चुका था, लेकिन उनकी हत्या के समाचार से दुनिया को बड़ा भारी धक्का लगा। सभी देशों के अखबारों, रेडियो व अन्य वैज्ञानिक साधनों द्वारा गांधीजी के नाम की इतनी चर्चा हुई कि उनके प्रति प्रेम और आदर का भाव सभी के दिलों में गूंज उठा।

मारकाट से बच सकता

पहले हम चीन गये। गृह-युद्ध की वजह से वहां की परिस्थिति डांवाडोल थी, फिर भी लोगों ने गांधीजी के प्रति बड़ी दिलचस्पी व आदर दर्शाया और इच्छा जाहिर की कि भारत व चीन के बीच ज्यादा गहरे सांस्कृतिक संबंध कायम हों। चंकाईशेक की सरकार पूरी तरह बदनाम हो चुकी थी; जनता में उसके प्रति कोई सहानुभूति न थी। कम्यूनिज्म को लोग इसलिए अपना रहे थे कि कोई दूसरा मार्ग ही न सूझता था। किन्तु कई प्रोफेसरों व पढ़े-लिखे लोगों ने इच्छा व्यक्त की कि अगर गांधी का संदेश चीन में भी फैल सकता तो उनका देश मार-काट से बचकर उन्नत और शांतिमय बन जाता।

यह नेतृत्व और वह!

जापान आज एक गुलाम देश है। वहां अमरीकी फौज का कब्जा है। देश के अच्छे-अच्छे होटल, दूकानें व पार्क जापानियों के लिए वर्जित हैं। अमरीका के सिपाही कई तरह से जापानियों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। लेकिन फिर भी जापान की जनता में गजब की शिस्त (अनुशासन) और सहनशीलता है। हमें यह जानकार बड़ा आश्चर्य हुआ कि जापान में एक गांधी-सोसाइटी है, जिसके करीब 50 हजार सदस्य हैं। टोक्यो के 'सुकिजी होंगांजी बुद्ध-मंदिर' के प्रधान पुजारी नाकायामा इस सोसाइटी के मंत्री हैं। पिछले वर्ष इस मंदिर में भगवान बुद्ध की मूर्ति के नजदीक महात्मा गांधी का चित्र रखकर दोनों महापुरुषों की पुण्यतिथि एक साथ बड़े आदर से मनायी गयी। जापानी जनता जानती है कि उनके नेताओं ने आजाद जापान को गुलाम बना डाला, जबकि गांधीजी ने गुलाम हिन्दुस्तान को आजाद कर दिया। इसी कारण आज जापान में बापू के विचारों व आदर्शों को बड़ी श्रद्धा से देखा जाता है। यह खुशी की बात है कि दिसंबर में होने वाली विश्वशांति परिषद में नाकायामा व एक-दो अन्य व्यक्ति जापान से भी पधारने वाले हैं।

परेशान अमरीका

अमरीका आज संसार का सबसे धनी और शक्तिशाली देश है। मेरा ख्याल था कि वहां गांधीजी के जीवन व कार्य में अधिक दिलचस्पी न दिखायी देगी, पर मेरा यह विचार गलत साबित हुआ। अमरीका की जनता ने बापू के प्रति इतना आदर दिखलाया कि हम चकित हो गये। हमें व्याख्यानों के लिए इतनी यूनीवर्सिटियों व दूसरी सांस्कृतिक संस्थाओं में बुलाया गया कि हमें जरा भी फुर्सत न मिली। अर्थशास्त्र के बहुत से प्रोफेसरों से चर्चा हुई। उन्होंने गांधीजी के आर्थिक विकेन्द्रीकरण के विचारों को बहुत पसंद किया और कहा कि अगर हिन्दुस्तान भूलकर भी अमरीका के केन्द्रीकरण व यन्त्रीकरण की नकल करेगा तो बड़ा दुर्भाग्य होगा। अमरीका के समझदार लोग भौतिकवाद से परेशान हो गये हैं और आशा रखते हैं कि गांधी का देश, भारत, उन्हें नयी रोशनी दिखला सकेगा। प्रो. आइंस्टीन, प्रो. जॉन ड्यूई, श्रीमती पर्ल बक, लूई फिशर व डॉ. होम्स बापू के प्रति गहरी श्रद्धा रखते हैं और उनके संदेश को अमरीका में फैलाने का भरसक प्रयत्न करते रहते हैं। अमरीका का मजदूर, टैक्सी ड्राइवर, विद्यार्थी व व्यवसायी 'इंडिया' का मतलब भी ठीक तौर से नहीं समझता। कुछ लोग 'इंडिया' का मतलब 'इंडियाना' समझ बैठते हैं, जो अमरीका में ही हब्शियों की एक रियासत है। लेकिन आप बस 'गांधी' कह दें तो तुरंत सब कुछ समझ जाते हैं। कहने लगते हैं—''गांधी बहुत बहादुर नेता था! उसने अंग्रेजों को बिना हथियारों के पराजित कर दिया! उसके जैसा महान व्यक्ति हजारों वर्षों में एक बार ही जन्म लेता है!''

सांस्कृतिक संबंध की अभिलाषा

इंग्लैंड में भी बापू के लिए जनता के मन में आदर है, लेकिन लोग आर्थिक कठिनाइयों के कारण काफी परेशान दिखायी पड़े। कुछ ऐसे लोग हैं जो अभी भी गांधीजी को ब्रिटिश साम्राज्य के बागी के रूप में देखना भूले नहीं हैं। किन्तु बापू के निर्वाण के बाद सारी दुनिया में उनकी आत्मा का प्रकाश फैला हुआ नजर आता है। इंग्लैंड में लार्ड पैथिक लोरेन्स, प्रो. हरेल्ड लॉस्की, श्री पोलक, मिस एगथा हैरीसन, श्री सोरेन्सेन इत्यादि से मिलने का अवसर मिला। सभी ने इच्छा प्रकट की कि गांधी-साहित्य का प्रचार इंग्लैंड में अधिक करने की कोशिश की जाय ताकि इंग्लैंड और भारत के बीच एक नया सांस्कृतिक संबंध कायम हो सके।

महिलाओं की धुन

योरप के देशों में अपेक्षा से कहीं ज्यादा श्रद्धा दिखलायी पड़ी। बेल्जियम एक छोटा और खुशहाल राष्ट्र है। वहां भी लोगों ने बापू के प्रति बहुत उत्साह और प्रेम व्यक्त किया। फ्रांस में 'गांधी-मित्र-मंडल (फ्रेंड्स ऑफ गांधी सोसाइटी) कायम हो चुकी है। इसकी मुख्य कार्यकर्ता कुछ बूढ़ी महिलाएं हैं, जो दिन-रात गांधीजी के संदेश को फ्रांस में फैलाने की धुन में लगी रहती हैं। पेरिस में 'यूनेस्को' के शिक्षा विभाग ने भी हमें विशेष निमंत्रण दिया और बापू की 'बुनियादी तालीम' के सिद्धांतों को जानने के

लिए एक व्याख्यान का आयोजन किया। स्व. रोमाँ रोलाँ की पत्नी और बहन पेरिस में बापू के साहित्य का प्रचार करने में काफी सहायता देती रहती हैं।

गांधी का अनुयायी स्विट्जरलैंड

स्विट्जरलैंड तो कई दृष्टियों से गांधीजी का अनुयायी ही है। वहां की आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था बहुत-कुछ विकेन्द्रित है। गृह उद्योगों का पर्याप्त चलन है। तीन या चार भाषाएं होते हुए भी सद्भावना व सहिष्णुता का वातावरण है। जन-साधारण का जीवन बहुत सादा, संयमी व मेहनती है। लोग रात को जल्द सो जाते हैं और सुबह जल्द उठ जाते हैं। हम देहातों में काफी अंदर तक गये। स्विट्जरलैंड का ग्राम्य-जीवन सुखी, स्वच्छ, समृद्धशाली व सुंदर है। विशेष राष्ट्रीय उत्सवों के अवसर पर लोग शहरों से देहातों में जाते हैं, न कि देहातों से शहरों की ओर। यद्यपि वहां सैनिक-शिक्षण अनिवार्य है, फिर भी लोगों में युद्ध-भावना बहुत कम है; वे शांतिप्रिय हैं। इसी कारण स्विट्जरलैंड पिछले दो महायुद्धों के बीच रहकर भी उससे अलिप्त रह सका। यह उचित ही था कि इस देश के जेनेवा शहर में आंतर्राष्ट्रीय संघ का प्रधान कार्यालय स्थापित हुआ, किन्तु दुःख है कि धीरे-धीरे संयुक्त राष्ट्र-संघ के दफ्तर जेनेवा से न्यूयार्क खिसकते जा रहे हैं।

जर्मनी में गांधी-साहित्य की भूख

जर्मनी की हालत बहुत खराब थी। पिछली लड़ाई में बेहद नुकसान हुआ। बर्लिन में तो पूरा लंका-दहन ही हो गया। करीब 40 फीसदी लोग जर्मनी में बेकार हैं। फिर भी जनता की हिम्मत टूटी नहीं है, वे बड़ी मेहनत से अपने देश को फिर उठाने का दिन-रात प्रयत्न कर रहे हैं। आम जनता युद्धों से ऊब गयी है। वे दुनिया में शांति व सहकार्य चाहते हैं। इसीलिए आज जर्मनी में गांधी-साहित्य की मांग व भूख है। कई जगह 'गांधी-सोसाइटी' कायम हो रही हैं। ऑस्ट्रेलिया में भी यही हाल है, लेकिन जर्मनी की अपेक्षा वहां कम बरबादी हुई है।

संस्कृति साम्य

चेकोस्लोवेकिया में करीब एक वर्ष से कम्यूनिस्ट राज चल रहा है। मैं सोचता था कि वहां बापू के नाम से लोग घबड़ायेंगे और मुझे व्याख्यान वगैरह देने की इजाजत नहीं मिलेगी, लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि वहां भी बहुत अच्छी सभाएं हुईं और कम्यूनिस्ट सरकार की संस्थाओं ने भी हमारा आदर-सत्कार किया। चेकोस्लोवेकिया की भाषा व संस्कृति भारतीय भाषाओं व तहजीब से काफी मिलती-जुलती हैं। प्राग का ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, विशेषकर प्रो. लास्की, गांधी-साहित्य के प्रचार के लिए सुंदर कार्य कर रहे हैं।

समानताओं वाला इटली

इटली में हम कई जगह गये। रोम की पुरानी संस्कृति के खंडहर देखे। एक जमाने में रोमन साम्राज्य का प्रभुत्व सारे योरप पर था। लेकिन आज उन सम्राटों की शान मिट्टी और पत्थरों में मिली पड़ी हैं। फिर भी इटली में पुरानी संस्कृति, विशेषकर चित्रकला व मूर्तिकला की झलक, चारों ओर देखने को मिली। हिन्दुस्तान व बापू के प्रति लोगों में आदर व श्रद्धा भी जगह-जगह देखी। इटली और हिन्दुस्तान में, वैसे भी, कई प्रकार की समानताएं हैं। दोनों देशों में गरीबी है, जनसंख्या अधिक है, गंदगी है, अनुशासन व मेहनत की कमी है। लोगों का रूप-रंग भी काफी मिलता-जुलता है।

सुकरात का देश

ग्रीस में गृह-युद्ध चालू था। जनता की आर्थिक स्थिति भी काफी गिरी हुई थी। लेकिन वहां हमें प्राचीन ग्रीक संस्कृति के दर्शन करना था। एथेंस का वह जेलखाना देखा, जहां सुकरात को जहर दिया गया था। प्लेटो व अरस्तू की एकेडमी के प्राचीन अवशेष भी देखे। यही ख्याल आया कि हजारों वर्ष पहले भारत व ग्रीस में घनिष्ठ संबंध था। आज भी अगर बापू के स्मरण में इन दोनों पुराने देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध स्थापित हो सके तो कितना अच्छा हो। राजनीतिक परिस्थिति के कारण हम ग्रीस में अधिक न घूम सके। लेकिन सुकरात के देश में पहुंचकर ऐसा लगा, मानों अपने घर आ गये।

हालिदा हानुम अदीब

टर्की में पहुंचकर बड़ा ताज्जुब हुआ। हम सोचते थे कि इस मुस्लिम राष्ट्र में गांधीजी को कौन याद करेगा? विशेषकर जब टर्की में पूर्वी सभ्यता को भुलाये जाने की जोरों से कोशिश की जा रही है! लेकिन वहां पहुंचते ही अखबारों में इतनी खबरें निकलने लगीं कि हमारा घूमना-फिरना मुश्किल हो गया। बापू के नाम से लोगों में इतना उत्साह फैल जायेगा, इसकी हमने जरा भी आशा न रखी थी। मैं वहां जाकर कई दिन बीमार ही पड़ा रहा, लेकिन श्रीमती मदालसा ने काफी काम किया और बापू के साहित्य का प्रचार अच्छा हुआ। वहां की प्रतिष्ठित महिला हालिदा हानुम अदीव गांधीजी की पुरानी भक्त हैं और हमेशा टर्की के अखबारों में बापू की विचारधारा पर लेख लिखती रहती हैं।

हमारा भ्रम

टर्की से सीरिया, इराक, इजराइल इत्यादि देशों में भी जाने का इरादा था, किन्तु मेरे स्वास्थ्य ने साथ न दिया और हमें लाचार होकर सीधा कराची आ जाना पड़ा। कराची आकर हमें लगा कि जैसे हम हिन्दुस्तान ही आ गये। करीब साढ़े पांच महीनों बाद स्वदेश की भूमि पर उतरे, ऐसा लगा; किन्तु कुछ घंटों में ही यह भ्रम दूर हो गया। हमने देख लिया कि कराची अब पाकिस्तान की राजधानी है, जहां लोगों को हिन्दुस्तान या गांधी का नाम सुनना भी अच्छा नहीं लगता। पाकिस्तान ने आर्थिक दृष्टि से काफी तरक्की की है। लोगों में जोश भी है। लेकिन हिन्दुस्तान के प्रति दुश्मनी की भावनाएं देखकर हमें बहुत रंज हुआ।

और फिर हम दिल्ली आये। हमने दिल्ली से पूरब की ओर चलकर अपनी भू-परिक्रमा शुरू की थी। पश्चिम से दिल्ली पहुंचकर हमारा विश्व-रूप-दर्शन पूरा हुआ। विदेशों में बापू के लिए अगाध प्रेम था, आदर था, श्रद्धा थी। लोग भारत की ओर गांधी के देश की हैसियत से ही सद्भावना-पूर्वक देखते थे। लेकिन दिल्ली में उतरते ही हमने महसूस किया कि चारों ओर अशांति व असंतोष है। जनता की नैतिकता का पतन होता जा रहा है। जो आदर्श बापू ने वर्षों तक हमारे सामने रखे, वे मानों हवा में उड़ गये हैं। भारत गांधी का देश बनने के बजाय न जाने क्या बनता जा रहा है! गांधी का नाम हम हर मौके पर अवश्य लेते हैं, लेकिन उनके विचारों को तो भूल-से गये हैं। हम सब इतना याद रखें कि अगर हिन्दुस्तान ने गांधी को भुला दिया तो दुनिया भी फिर हमें बहुत-कुछ भूल जायेगी और जो मान-आदर विदेशों में हमारे लिए है, वह मिट जायेगा। हम समय पर चेत जावें और ऐसा मौका आने न दें। ❑

4 नवंबर, जन्मदिन पर

जमनालाल बजाज

गांधी का 'पांचवां बेटा' जिसने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत जीकर दिखाया

❑ अव्यक्त

आज के पूंजीपतियों को देखते हुए हमारे लिए कल्पना करना भी मुश्किल हो सकता है कि भारत में जमनालाल बजाज जैसे वैरागी पूंजीपति भी हुए हैं।

पूंजीपतियों के साथ एक समस्या होती है कि वे स्वयं ही अपनी प्राथमिक छवि यानी व्यवसायी या व्यापारी की छवि से मुक्त नहीं हो पाते. और कई बार समाज ही उन्हें जीवनपर्यंत उसी नज़र से देखता रह जाता है. एक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जमनालाल बजाज का स्वतंत्र चित्रण न हो पाने की वजह शायद यही रही होगी. आज के पूंजीपतियों की मानसिकता और जीवनचर्या को देखते हुए हमारे लिए कल्पना करना भी मुश्किल हो सकता है कि भारत में जमनालाल बजाज जैसे वैरागी पूंजीपति भी हुए हैं, जिन्होंने त्याग और ट्रस्टीशिप का ऐसा उदाहरण पेश किया कि गांधी और विनोबा जैसे लोग उनके साथ पारिवारिक सदस्य के रूप में घुल-मिल गए.

जमनालाल एक गरीब मारवाड़ी के घर पैदा हुए थे. नेहरू के जन्म के साल ही, और उनसे ठीक दस दिन पहले. आज के राजस्थान और तब की जयपुर रियासत के सीकर में. जमनालाल केवल चौथी कक्षा तक पढ़े थे. उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी. वर्धा के एक प्रौढ़ निःसंतान दंपत्ति ने बहुत ही चालाकी से जमनालाल की मां से वचन ले लिया और फिर उस बहुत ही धनी परिवार ने जमनालाल को गोद ले लिया.

लेकिन जमनालाल को धन से वितृष्णा हो गई थी. एक बार पूरे परिवार को किसी बड़े विवाहोत्सव में जाना था. पिता और परिवार के अन्य सदस्य अपने धन का खूब बढ़-चढ़कर प्रदर्शन करना चाहते थे. जमनालाल से कहा गया कि वह भी हीरे-पन्नों से जड़ा एक हार पहनकर वहां जाएं. लेकिन उन्होंने साफ मना कर दिया. इस बात पर पिता से अनबन हो गई और वे घर छोड़कर भाग निकले. उस समय जमनालाल की उम्र केवल 17 साल थी.

बाद में उन्होंने एक स्टैम्प पेपर पर एक कानूनी मजमून बनाकर पिताजी को भेज दिया. अन्य बातों के अलावा जमनालाल ने इसमें लिखा था, 'मुझे आपके पैसों से कोई लोभ-लालच नहीं. मैं धन की परवाह ही नहीं करता. मैं घर से कुछ भी लेकर नहीं जा रहा हूं. जो कपड़ा तन पर था, केवल वही पहने जा रहा हूं. प्रार्थना करता हूं कि मेरे जाने पर आप दुखी मत होइयेगा और सदा प्रसन्नचित्त रहिएगा. दुनियादारी के संबंध एकदम खोखले होते हैं. सांसारिक सुख-सुविधाएं हमें अपने घातक

शिकंजे में जकड़ लेती हैं. आपको धन्यवाद कि आज आपने मुझे उस भयानक जंजाल से मुक्त कर दिया. आप निश्चिंत रहें. मैं जीवन में कभी आपका एक पैसा भी लेने के लिए किसी अदालत में नहीं जाऊंगा. इसीलिए यह कानूनी दस्तावेज बनाकर भेज रहा हूं. आप अपने पैसों का उपयोग दान करने के लिए करें. और दान भी खुशी-खुशी सेवाकार्यों के लिए करें, दिखावे और यश के लिए नहीं.'

बाद में किसी तरह जमनालाल को ढूंढ़ निकाला गया और घर वापस आने के लिए मनाया गया. पिता (जिन्हें संभवतः वृद्ध होने की वजह से वे अपना दादा मानते थे) के मरने के बाद भी जमनालाल को यह बात याद रही कि जिस धन का उन्होंने एक बार परित्याग कर दिया है, उसका मालिक बनने का उन्हें कोई नैतिक अधिकार नहीं है. बाद में जमनालाल ने विरासत में मिली तमाम संपत्ति का मूल्यांकन कराया और उसमें उस दिन तक का चक्रवृद्धि ब्याज जोड़कर उतनी संपत्ति का दान कर दिया. ऐसा उन्होंने जीवन में कई बार किया. पूरा जीवन वह अपने आप को एक ट्रस्ट के ट्रस्टी की भांति ही मानते रहे.

बाल-विवाह के उस दौर में जमनालाल की शादी 13 साल की उम्र में ही नौ साल की जानकी से कर दी गई. युवा जमनालाल के भीतर आध्यात्मिक खोजयात्रा आरंभ हो चुकी थी और वह किसी सच्चे कर्मयोगी गुरू की तलाश में भटक रहे थे. इस क्रम में पहले वह मदन मोहन मालवीय से मिले. कुछ समय तक वे रबीन्द्रनाथ टैगोर के साथ भी रहे. अन्य कई साधुओं और धर्मगुरुओं से भी वह जाकर मिले. 1906 में जब बाल गंगाधर तिलक ने अपनी मराठी पत्रिका 'केसरी' का हिंदी संस्करण नागपुर से निकालने के लिए इश्तहार दिया, तो युवा जमनालाल ने एक रुपये प्रतिदिन के हिसाब से मिलने वाले जेबखर्च से जमा किए गए सौ रुपये तिलक को जाकर दे दिए. जमनालाल ने लिखा है कि देशसेवा के लिए दान में दिए गए उस सौ रुपये से जो खुशी उन्हें तब मिली थी, वैसी बाद में लाखों दान करने पर भी नहीं मिली.

इस बीच जमनालाल महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में किए जा रहे सत्याग्रह की खबरों को पढ़ते और उनसे बहुत प्रभावित होते रहे. 1915 में भारत वापस लौटने के बाद जब गांधीजी ने साबरमती में अपना आश्रम बनाया तो जमनालाल कई बार कुछ दिन वहां रहकर गांधीजी की कार्यप्रणाली और उनके व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करते रहे. गांधीजी में उन्हें संत रामदास के उस वचन की झलक मिली कि 'उसी को अपना गुरू मानकर शीष

नवाओ जिसकी कथनी और करनी एक हो.' जमनालाल को अपना गुरू मिल चुका था. उन्होंने पूरी तरह से गांधीजी को अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया.

जमनालाल अब गांधीजी से अक्सर यह अनुरोध करने लगे कि गांधी अपना आश्रम वर्धा में आकर बनाएं, जहां उन्हें जमनालाल की ओर से हर प्रकार का सहयोग मिलेगा. लेकिन गांधी अपनी गति से चलने वाले व्यक्ति थे. बहुत कहने पर उन्होंने अपनी जगह 1921 में विनोबा को वर्धा भेज दिया और कहा कि वे जाकर वहां के 'सत्याग्रह आश्रम' की जिम्मेदारी संभालें. विनोबा पूरे बजाज परिवार के कुलगुरू की तरह वहां जा बसे. विनोबा और जमनालाल बजाज के बीच हुए पत्राचार को पढ़कर उन दोनों के बीच के आत्मीय संबंधों का पता चलता है.

1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन के दौरान जमनालाल ने एक अजीब सा प्रस्ताव महात्मा गांधी के सामने रख दिया. जमनालाल ने गांधीजी से अनुरोध किया कि वे उनका 'पांचवां बेटा' बनना चाहते हैं और उन्हें अपने पिता के रूप में 'गोद लेना' चाहते हैं. पहले पहल तो इस अजीब प्रस्ताव को सुनकर गांधीजी को आश्चर्य हुआ, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने इस पर अपनी स्वीकृति दे दी. 16 मार्च, 1922 को एक विचाराधीन कैदी के रूप में गांधीजी ने साबरमती जेल से जमनालाल को एक चिट्ठी में लिखा था, 'तुम पांचवें पुत्र तो बने ही हो, किन्तु मैं योग्य पिता बनने का प्रयत्न कर रहा हूं. दत्तक लेने वाले का दायित्व कोई साधारण नहीं है. ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में इसके योग्य बन सकूं.'

बहुत बाद में एक बार किसी चिट्ठी में जल्दबाजी में गांधीजी ने उन्हें 'चिरंजीवी जमनालाल' की जगह 'भाई जमनालाल' कहकर संबोधित कर दिया. इसपर जमनालाल इतने दुखी हो गए कि इस बारे में उन्होंने एक लंबी चिट्ठी महात्मा गांधी को लिखी और गांधीजी को स्पष्टीकरण देना पड़ा. गांधीजी के प्रभाव में जमनालाल आत्मचिंतन और आत्मालोचना की ओर प्रवृत्त हुए. वह गांधीजी के सामने अपना हृदय खोलकर रख देते और अपनी तमाम समस्याओं का समाधान उन्हीं से मिलकर पाते.

जमनालाल ने सामाजिक सुधारों की शुरुआत सबसे पहले अपने घर से ही की. असहयोग आंदोलन के दौरान जब विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार शुरू हुआ तो उन्होंने सबसे पहले अपने घर के तमाम कीमती और रेशमी वस्त्रों को बैलगाड़ी पर लदवाकर शहर के बीचोंबीच उसकी होली जलवाई. उनकी पत्नी जानकीदेवी ने भी सोने और चांदी जड़े हुए अपने वस्त्रों को आग के हवाले कर दिया और आजीवन खादी पहनने का व्रत ले लिया.

त्याग की ये सूची लंबी है. जमनालाल ने अंग्रेज सरकार द्वारा अपनी ओर से दी गई 'राय-बहादुर' की पदवी त्याग दी. बंदूक और रिवॉल्वर जमा कराते हुए अपना लाइसेंस भी वापस कर दिया. अदालतों का बहिष्कार करते हुए अपने सारे मुकदमे वापस ले लिए. मध्यस्थता के जरिए विवादों को निपटाने के लिए अपने साथी व्यवसायियों को मनाया. जिन वकीलों ने आज़ादी की लड़ाई के लिए अपनी वकालत छोड़ दी, उनके निर्वाह के लिए उन्होंने कांग्रेस को एक लाख रुपये का अलग से दान दिया. सनातनियों के घोर विरोध के बावजूद वर्धा स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर में दलितों का प्रवेश कराने में उन्होंने विनोबा के नेतृत्व में अद्भुत सफलता हासिल की. अपने घर के प्रांगण, खेतों और बगीचों में स्थित कुओं को उन्होंने दलितों के लिए खोल दिया.

असहयोग आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ तीखा भाषण देने और सत्याग्रहियों का नेतृत्व करने के लिए 18 जून, 1921 को जमनालाल को गिरफ्तार कर लिया गया. उनके साथ-साथ विनोबा को भी गिरफ्तार कर लिया गया. विनोबा को तो एक ही महीने की सजा हुई, लेकिन जमनालाल को डेढ़ साल के सश्रम कारावास की कठोर सजा और 3000 रुपये का जुर्माना भी हुआ. 1935 के अधिनियम के तहत जब कांग्रेस ने चुनाव लड़ने का फैसला किया तो जमनालाल ने इसका खुला विरोध किया था. बाद में जब चुने गए विधायक और मंत्री ब्रिटेन की राजशाही के नाम पर शपथ-ग्रहण करने लगे, तो भी उन्होंने इस पर ऐतराज जताया. कांग्रेस के इस निर्णय से वे कभी संतुष्ट न हो सके. जमनालाल को कभी किसी पद की इच्छा नहीं रही. 1937-38 में हरिपुरा में कांग्रेस अध्यक्ष उन्हीं को बनाने पर सहमति हो चुकी थी. लेकिन उन्होंने गांधीजी से कहा कि यूरोप से लौटे सुभाष चंद्र बोस को यह सम्मान और अवसर दिया जाना चाहिए.

1938 में जमनालाल बजाज राजस्थान (तब जयपुर रियासत) के अकालग्रस्त इलाकों का दौरा कर कुछ राहत कार्य करना चाहते थे. लेकिन 29 दिसंबर, 1938 को सवाई माधोपुर स्टेशन पर एफएस यंग नाम के एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी ने उन्हें जयपुर के अंग्रेज दीवान का एक आदेश दिखाया. इसमें लिखा था कि जमनालाल जयपुर की सीमा में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि इससे अशांति उत्पन्न होने का खतरा है. जमनालाल ने जवाब दिया, 'मैंने जयपुर रियासत में जन्म लिया है, वहीं का पला-बढ़ा हूं. वहीं का नागरिक हूं. मैं अपने ही राज्य के लिए खतरा कैसे हो सकता हूं. जयपुर का दीवान तो खुद ही विदेशी है. उसे मुझे रोकने का क्या अधिकार है? मुझे ऐसा कोई आदेश बर्दाश्त नहीं है और मैं इसे तोड़ने जा रहा हूं.' अंग्रेज अधिकारी यह सुनकर हक्का-बक्का रह गया.

1924 में नागपुर में हुए एक हिन्दू-मुस्लिम दंगे में जमनालाल निर्भीक होकर बीच-बचाव में गए. इसमें उनको चोटें आ गईं. पांच सितंबर, 1924 को महात्मा गांधी ने सूरत की सभा में लोगों से कहा, 'आप अपना डरपोकपन दूर कर लें. जमनालालजी के हाथ में चोट आई, इससे मुझे प्रसन्नता हुई. यदि झगड़े-फसाद को शांत करते हुए वे मर भी जाते, तो भी मुझे प्रसन्नता ही होती. क्योंकि उससे हिंदू धर्म की ज्यादा रक्षा होती. उनको अकस्मात् ही पत्थर लगा. लेकिन जो पत्थरों की बौछार में जाकर खड़ा होता है, उसे केवल पत्थर ही नहीं लगेगा, बल्कि वह मर भी सकता है. यदि जमनालालजी मर जाते तो इससे लड़ने वाले दोनों पक्ष लज्जित होते और रोते.' उल्लेखनीय है कि गांधीजी के आश्रम में रहने वाली रेहाना तैयबजी के साथ जमनालाल जी का बहन-भाई का रिश्ता रहा.

11 फरवरी, 1942 को अकस्मात ही जमनालालजी का देहांत हो गया. उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी जानकी देवी ने स्वयं को देशसेवा में समर्पित कर दिया. विनोबा के भूदान आंदोलन में भी वह उनके साथ रहीं. जमनालाल जी ने गांधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत को वास्तविक जीवन में जीकर दिखाया. ❑

अध्यक्ष की कलम से

दक्षिण अफ्रीका में बापू की 150वीं जयंती

❑ महादेव विद्रोही

गांधी आश्रम ट्रस्ट, फीनिक्स आश्रम ट्रस्ट एवं गुड गवरनेंस अफ्रीका की ओर से 3 से 5 अक्तूबर 2019 को डरबन में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। ज्ञातव्य है कि बापू द्वारा 12 सितम्बर 1912 को फीनिक्स आश्रम ट्रस्ट की स्थापना की गयी थी। उनके निमंत्रण पर मैं, श्री आदित्य पटनायक, श्रीमती आशा बोथरा, श्री सोमनाथ रोड़े, श्री शेख हुसैन एवं श्री वी.अरविंद रेड्डी इस सम्मेलन में शामिल हुए। सम्मेलन का मुख्य विषय था – 21वीं सदी में गांधी का अध्यात्म, उनका जीवन तथा उनकी विरासत। इस विषय पर अलग-अलग देशों के प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे।

सम्मेलन में प्रवासी भारतीय संघ के नाम से भारत से 5-6 लोग और गये थे, जो बात-बात में मोदी का जिक्र करते थे तथा मोदी को गांधी के बराबर का 'मास मोबिलाइजर' बताते रहते थे। हद तो तब हो गयी जब उनमें से एक ने गांधी को आज के वैश्वीकरण का समर्थक भी बता दिया। इस पर इला गांधी की पुत्री तथा वकील सुश्री आशा रामगोबिन सख्त नाराज हुईं और उन्होंने गांधी को गलत रूप से उद्धृत करने पर सख्त आपत्ति व्यक्त की।

मुझे लगता है कि जो लोग गांधी की हत्या से खुश हुए थे और मिठाइयां बांटी थीं, उनकी जमात हर मंच पर कब्जा करना चाहती है तथा इस बात का प्रचार करना चाहती है कि मोदी गांधी का ही काम कर रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि मोहनदास करमचंद गांधी दादा अब्दुल्ला के एक वकील के रुप में 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये थे। उन्हें 7 जून

1893 को प्रिटोरिया जाते हुए पीटर मारित्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी से धक्का मारकर इसलिए गिरा दिया गया क्योंकि वे काली चमड़ी के थे। उस समय वहां गोरों के अलावा दूसरों को प्रथम श्रेणी में यात्रा करने की अनुमति नहीं थी। यहीं से दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत हुई।

इसके पहले अंग्रेज हजारों भारतीयों को गुलाम के रूप में जहाजों में लादकर दक्षिण

दक्षिण अफ्रीका में सर्व सेवा संघ का प्रतिनिधि मंडल

अफ्रीका ले गये थे। भारत से जाते समय रास्ते में ही बड़ी संख्या में लोग मर गये। अफ्रीका में उनसे गुलामों की तरह काम करवाया जाता था एवं उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता था। गांधीजी के कारण वे सब संगठित हुए। परिणामस्वरूप अंग्रेजों को अपने कई काले कानूनों को बदलना पड़ा तथा दक्षिण अफ्रीका की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

7 अक्तूबर को हम जोहानिसबर्ग के पास टॉलस्टाय फॉर्म पहुंचे। यह जोहानिसबर्ग से करीब 40 कि.मी.की दूरी पर है। एक जर्मन सज्जन हरमन कैलेनबैक ने जोहानिसबर्ग के तत्कालीन म्युनिसिपल काउन्सिलर एल. वी. पारट्रिज से 2000 पाउन्ड में 1100 एकड़ जमीन खरीदकर गांधीजी को भेंट की थी। महात्मा गांधी एवं हरमन कैलेनबैक दोनों टॉलस्टाय से प्रभावित थे। उस समय वहां 1000 फलों के पेड़ थे। यहां गांधीजी ने सामुदायिक जीवन के प्रयोग किये। यह सत्याग्रहियों का प्रशिक्षण केन्द्र बना। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्ष रहे। इस दरमियान उन्हें 4 बार गिरफ्तार किया गया एवं 17 महीने जेल में रखा गया। आज यह सब कुछ उजड़-सा गया है। आश्रम के पास करीब 3 एकड़ जमीन मात्र बची है। इसकी अधिकांश जमीनें ईंट बनाने वाली कंपनियों ने हस्तगत कर ली है। अब वहां सिर्फ एक चबूतरा है, जहां तब गांधी का घर था। अभी मोहनभाई हीरा इसकी देखभाल करते हैं।

हम पीटर मारित्सबर्ग भी गये। यहां महात्मा गांधी, कस्तूरबा एवं नेल्सन मंडेला को जेल में रखा गया था। अब इस जेल को स्मारक में बदल दिया गया है। दक्षिण अफ्रीका के लोगों को गांधी और नेल्सन मंडेला, दोनों पर बहुत ही गर्व है।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की संख्या काफी है। जोहानिसबर्ग दक्षिण अफ्रीका का

एक बड़ा शहर है और एक तरह से दक्षिण अफ्रीका का प्रवेश द्वार है। इसकी जनसंख्या करीब 40 लाख है। कहते हैं कि इसमें से करीब 3.5 लाख की जनसंख्या भारतीय मूल के लोगों की है। जोहानिसबर्ग की गणना विश्व के 100 श्रेष्ठ शहरों में होती है। इस शहर में विश्व का सबसे बड़ा मानवनिर्मित जंगल है।

जब हम डरबन में भारतीयों की गुलामी से संबंधित एक संग्रहालय देखकर लौट रहे थे तब हमारी टैक्सी की ड्राइवर, जो एक जुलू महिला थी, ने हमें एक अस्पताल दिखाते हुए बताया कि 1994 से पहले इस अस्पताल में सिर्फ गोरे लोगों का ही इलाज होता था।

दक्षिण अफ्रीका में एक सुखद अनुभव हुआ। हमें कहीं भी पुलिस दिखाई नहीं पड़ी, सिर्फ एक जगह को छोड़कर जहां राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक दुर्घटना हो गयी थी। हमें हवाई अड्डे पर भी कोई पुलिस दिखाई नहीं पड़ी। भारत में तो बिना पुलिस जांच के आप हवाई अड्डे में प्रवेश की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। वहां हमारी कहीं किसी मेटल डिटेक्टर से भी कोई जांच नहीं हुई।

पीटर मारित्सबर्ग जुलू-नाटाल राज्य की राजधानी है। यहां चर्च स्ट्रीट पर गांधीजी की प्रतिमा है। भारतीय समुदाय और गांधी प्रेमी अन्य लोग हर वर्ष 2 अक्तूबर को यहां बापू की याद में रैली निकलते हैं। छुट्टी का दिन नहीं होने के कारण इस वर्ष यह रैली 6 अक्तूबर को निकाली गयी। रैली की शुरुआत उस पुरानी जेल से हुई, जहां बापू, बा और नेल्सन मंडेला को रखा गया था। रैली का समापन पीटर मारित्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर हुआ। उसमें मेरे सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। बापू पर आधारित अनेक गीत तथा नृत्य प्रस्तुत किये गये। ऐसा लगता था कि हम भारत में ही हैं।

अफ्रीका में रहने वाले भारतीय मूल के अधिकांश लोग अपनी मातृभाषाएं भूल चुके हैं। उनका सारा व्यवहार अंग्रेजी में ही होता है। पर पुराने लोग अब भी अपनी मातृभाषाओं में थोड़ा बहुत बोल लेते हैं। कई लोगों को पता ही नहीं है कि उनका मूल स्थान कहां है। उन्हें इसे जानने की उत्कंठा है पर कइयों को यह पता ही नहीं चल पा रहा है। कई लोग बीच-बीच में भारत आते रहते हैं और अपने पूर्वजों के जन्म स्थान भी जाते रहते हैं, पर सबके लिए यह संभव नहीं है।

सेंट पीटर मेरित्सबर्ग में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सर्व सेवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महादेव विद्रोही

दक्षिण अफ्रीका में भारत से मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश एवं गुजरात के लोग आये। अन्य राज्यों के भी छिटपुट लोग हैं। हमारी बस के चालक विजय सिंह राजस्थान के थे। यहां मुहर्रम सभी लोग मिलकर मनाते हैं। शादी-ब्याह में जाति का कोई बंधन नहीं रह गया है। भारतीय मूल में कहीं भी शादी हो जाती है। अंग्रेजों से दक्षिण अफ्रीका मुक्त तो हो गया पर अभी भी शासन के अधिकांश संसाधन अंग्रेजो के हाथों में ही है।

भारतीय मूल की एक बुजुर्ग महिला ने बताया कि यहां हो रही लूटपाट से भारतीय मूल के लोग परेशान हैं। जिनके पास पैसे हैं, ऐसे अनेक लोगों ने दक्षिण अफ्रीका छोड़कर दूसरे देशों में अपने व्यापार-धंधे शुरू कर दिये हैं। पर यह सबके लिए संभव नहीं है।

दक्षिण अफ्रीका में हमें कहीं भी मोटर साइकिल या साइकिल दिखाई नहीं पड़ी। कारों की भरमार है। कारों के 4-4 मंजिले शो रुमों को देखकर आश्चर्य हुआ। सड़कें बहुत ही अच्छी हैं। राष्ट्रीय राजमार्गों पर कहीं भी क्रॉसिंग नहीं है। लम्बी दूरी की बसें भी डबल डेकर हैं। सामान रखने के लिए ट्रेलर लगाये जाते हैं। ट्रकों में भी ट्रेलर होते हैं। तीन ओर से ट्रकों को विज्ञापनों के विशाल होर्डिंगों से ढंक कर रखा जाता है। ❑

बनवारीलाल गौड़ का निधन

देश के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता बनवारीलाल गौड़ का 17 अक्टूबर 2019 को 85 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं श्री ठक्कर बापा द्वारा स्थापित भारतीय आदिम जाति सेवक संघ के पिछले 10 वर्षों से अध्यक्ष थे। इनका जन्म राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के दूरस्थ गांव वामनियावास में हुआ था। वे आदिवासी क्षेत्र के जिलों में आचार्य विनोबा भावे की भूदान यात्रा के संयोजक रहे और उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़ आदि जिलों में भूदान कार्यक्रम का संयोजन किया।

उन्होंने पूरा जीवन रचनात्मक कार्य के लिए समर्पित किया। वे राजस्थान की अनेक खादी संस्थाओं के मार्गदर्शक थे। वे राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष, खादी ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य के साथ-साथ देश के गांधी विचार की प्रमुख संस्थाओं से जुड़े रहे।हम सभी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं। **–डॉ. अवध प्रसाद**

आवरण-कथा

आरे जंगल

आरे के जंगलों पर सरकार की कुल्हाड़ी

❑ मयूरेश कोण्णुर और जाह्नवी मुले

हम प्रकृति की पूजा करते हैं और प्रकृति ही हमारा ईश्वर है...आदिवासी पूरी तरह से जंगल पर निर्भर हैं. ये कहना है मुंबई की आरे कॉलोनी में रहने वाले श्याम प्रकाश भोइर और मनीषा धिंडे का. इस आरे कॉलोनी के भीतर 27 छोटे-छोटे गांव हैं और इन गांवों में सदियों से तकरीबन 8,000 आदिवासी रहते आए हैं. कई युवा आदिवासी व्यस्त मुंबई शहर में न रहकर इन शांतिपूर्ण गांवों में ही रहना पसंद करते हैं.

पिछले दिनों मुंबई मेट्रो प्रोजेक्ट के लिए इसी आरे कॉलोनी के जंगल काटे गये. इसी इलाके में मेट्रो के लिए कार शेड बनाया जाएगा और इसके लिए तकरीबन 2,600 पेड़ काटे गये हैं.

जब अदालत ने जंगल नहीं माना

पेड़ों की कटाई के साथ ही यहां के पेड़ काटे जाने का भारी विरोध भी शुरू हो गया। स्थानीय लोगों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं, कुछ बॉलीवुड कलाकारों और राजनीतिक पार्टियों ने पेड़ काटे जाने का प्रस्ताव आते ही विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया था. इस मद्देनज़र बॉम्बे हाईकोर्ट में कई याचिकाएं भी दायर की गईं लेकिन अदालत ने इस इलाके को जंगल मानने से इनकार करते हुए सभी याचिकाएं ख़ारिज़ कर दीं.

अदालत का फ़ैसला आते ही प्रदर्शन और तेज़ हो गए. विरोध कर रहे पर्यावरण कार्यकर्ताओं की पुलिस के साथ हाथापाई हुई और इलाक़े में तनाव को देखते हुए तैनात पुलिसकर्मियों की संख्या बढ़ा दी गई और साथ ही पूरे इलाके में धारा 144 लगा दी गई. पुलिस ने विरोध कर रहे 50 से अधिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया और अन्य कई लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया.

इस बीच आरे कॉलोनी के अंदर बसे गांवों में रहने वाले आदिवासियों को अपने भविष्य की चिंता सता रही है. यहां रहने वाले आदिवासी युवा श्याम प्रकाश भोइर कहते हैं कि जैसे एक बेटा अपनी मां के बग़ैर नहीं रह सकता, वैसे ही हम इस जंगल के बिना नहीं रह सकते. एक पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं होता. उसमें छिपकली, बिच्छू, कीड़े, झींगुर और चिड़िया भी रहती हैं. हर पेड़ की अपनी इकॉलजी है. यह सिर्फ पेड़ की नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व की बात है. आरे के ही एक गांव में रहने वाली मनीषा ने बताया कि हमसे पिछली पीढ़ी पढ़ी-लिखी नहीं थी. वह कृषि पर निर्भर थी और आदिवासी लोग जंगलों से ही सब्जियां इकट्ठा करते थे. हम भी उसी पर निर्भर थे. हम बाज़ार से कुछ भी नहीं ख़रीदते थे.

मुंबई मेट्रो रेल प्राधिकरण ने कहा है कि किसी भी आदिवासी या वन्यजीव की जगह को कार डिपो के लिए नहीं लिया जाएगा लेकिन आदिवासियों का मानना है कि मेट्रो परियोजना के यहां आने के बाद वन्यजीवन पर इसका असर पड़ेगा. रेल प्राधिकरण के अनुसार यह एक महत्वपूर्ण परियोजना है. इलाके में यात्रा करने के दौरान हर दिन 10 लोग मर जाते हैं. मेट्रो शुरू होने के बाद मुंबई के स्थानीय लोगों का तनाव कम हो जाएगा.

जब लाखों पेड़ हैं तो जंगल कैसे नहीं?

मनीषा कहती हैं कि हम मेट्रो या मेट्रो कार शेड का विरोध नहीं कर रहे हैं. हम मेट्रो कार डिपो को बनाने के लिए 2,600 से अधिक पेड़ काटे जाने का विरोध कर रहे हैं. हम नहीं चाहते कि विकास न हो, लेकिन ये पेड़ की क़ीमत पर नहीं होना चाहिए. मनीषा के मुताबिक़ यहां पेड़-पौधे और क़ुदरत का ऐसा रूप इसलिए है क्योंकि आदिवासी इसका संरक्षण करते हैं. सरकार कहती है कि ज़मीन सरकार की है, लेकिन सरकार यहां के पेड़ों की देखभाल नहीं करती. आरे कॉलोनी में 4.8 लाख पेड़ हैं लेकिन फिर भी यह वन विभाग के अंतर्गत नहीं हैं. इस पर श्याम कहते हैं कि वे 2,600 पेड़ काटेंगे. इस छोटी सी जगह में बहुत सारे पेड़ हैं, इसका मतलब है कि यह जंगल है. कोई भी इस पर सहमत होगा लेकिन सरकार इसको नहीं मानती है.

पर्यावरण कार्यकर्ताओं का आरोप है कि अदालत की अनुमति के बाद पेड़ को काटने के लिए 15 दिनों का समय दिया जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और तुरंत ही पेड़ काटे जाने लगे.

कल कहेंगे कि आप इंसान नहीं

इस इलाके में रहने वाले आदिवासी कार्यकर्ता प्रकाश भोइर ने कहा कि रात लगभग 9.30 बजे कॉर्पोरेशन के लोग अंदर आए और उन्होंने कार-शेड के लिए चिह्नित जगह पर पेड़ों को काटना शुरू कर दिया. यहां प्रदर्शन में हिस्सा लेने आये सुशांत बाली ने बताया कि यह आंदोलन पांच साल से चल रहा है, मैं पिछले साल इसमें शामिल हुआ. ये पेड़ हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं. आज वे कहते हैं कि यह जंगल नहीं है. कल वे आपको बताएंगे कि आप इंसान नहीं हैं और आपको ऑक्सीजन की ज़रूरत नहीं है. हम इस शहर और अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित हैं. हम पिछले सात हफ्तों से लगातार इसका विरोध कर रहे हैं.

बॉम्बे हाईकोर्ट द्वारा याचिकाएं ख़ारिज़ करने के बाद पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने एक नई अर्जी भी डाली थी लेकिन अदालत ने इसमें दख़ल देने से इनकार कर दिया है. बॉम्बे हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से सुप्रीम कोर्ट का

रुख़ करने को कहा. बॉम्बे हाई कोर्ट ने यह कहकर याचिकाओं को ख़ारिज कर दिया था कि मामला पहले ही सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) के समक्ष लंबित है, इसलिए हाई कोर्ट इसमें फैसला नहीं दे सकता है.

सरकार का पक्ष

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने आरे कॉलोनी में पेड़ों की कटाई को लेकर कहा कि बॉम्बे हाई कोर्ट ने फ़ैसला दिया है कि यह जंगल नहीं है.' उन्होंने कहा कि जब दिल्ली में पहले मेट्रो स्टेशन बना तो 20-25 पेड़ काटे जाने की ज़रूरत थी. तब भी लोगों ने विरोध किया था, लेकिन काटे गए प्रत्येक पेड़ के बदले पांच पेड़ लगाए गए. दिल्ली में कुल 271 मेट्रो स्टेशन बने, साथ ही जंगल भी बढ़ा और 30 लाख लोगों की पर्यावरण पूरक सार्वजनिक यातायात की व्यवस्था हुई. यही मंत्र है, विकास भी और पर्यावरण की रक्षा भी, दोनों साथ-साथ.'

इधर सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को ख़ुद अपनी सहयोगी शिवसेना से सबसे बड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है. शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे और उनके बेटे आदित्य ठाकरे आरे कॉलोनी में पेड़ों की कटाई के विरोध में उतर आए हैं. अंततः सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद पेड़ों की कटाई रोक दी गयी है। महाराष्ट्र सरकार का कहना है कि हमने जरूरत भर पेड़ काट लिये हैं।

–बीबीसी

4 मार्च 1951

जवाहर लाल नेहरू ने आरे में लगाया था पहला पौधा

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई के आरे कॉलोनी में पेड़ों की कटाई पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। अब इस मामले पर 21 अक्टूबर को अगली सुनवाई होनी है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद महाराष्ट्र सरकार ने कहा कि अब सरकार कोई पेड़ नहीं काटेगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार रिपोर्ट दे और कोर्ट को बताए कि अबतक आरे में कितने पेड़ काटे गए हैं? अगर आरे कॉलोनी के इतिहास पर नजर डालें, तो ये विवाद आज का नहीं है, ये काफी पुराना है फिर चाहे जंगल एरिया हो या फिर इको जोन। बता दें कि इस कॉलोनी की नींव देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने रखी थी और यहां एक पेड़ भी लगाया था।

देश की आजादी के 4 वर्ष बाद 4 मार्च 1951 में जवाहर लाल नेहरू ने पौधारोपण कर यहां डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए आरे मिल्क कॉलोनी की नींव रखी थी। नेहरू के पौधारोपण के बाद यहां इतने पेड़ लगाए गए कि 3166 एकड़ क्षेत्रफल में फैले भूभाग ने कुछ ही समय में जंगल का रूप ले लिया।

आरे मिल्क कॉलोनी में मुंबई के कई इलाके आते हैं, जिनमें साई, गुंडगाव, फिल्म सिटी, रॉयल पॉल्म, आरे, पहाड़ी गोरेगांव और पसपोली इलाका शामिल है। इस क्षेत्र में कई फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है, रात में यहां के कुछ रास्तों से निकलने पर रोक भी लगाई गई है।

मायानगरी मुंबई में सार्वजनिक यातायात की मुश्किलें जाहिर हैं, लोकल ट्रेन के अलावा ऐसा कोई साधन नहीं है जो लाखों यात्रियों का बोझ उठा सके। 2014 में यहां पहली मेट्रो आई तो लोगों को काफी रास आई, जिसके बाद इसके विस्तार की बात छिड़ गई। विस्तार के दौरान जब मेट्रो के शेड की जरूरत हुई तो फिल्मसिटी के बराबर में आरे कॉलोनी के जंगल का चुनाव हुआ, जिसे मुंबई का फेफड़ा कहा जाता है।

शेड के लिए किसी और स्थान पर जगह नहीं मिली तो सरकार की ओर से आरे के पेड़ों में ही शेड बनाने का फैसला हुआ। इस फैसले के बाद मुंबई में आंदोलनों की शुरुआत हुई, आम आदमी से लेकर नेता और अभिनेता हर कोई Save Aarey का कैंपेन चलाने लगे और यह विवाद बॉम्बे हाईकोर्ट तक पहुंच गया। बॉम्बे हाईकोर्ट से महाराष्ट्र सरकार को इजाजत मिली तो तुरंत पेड़ कटाई का काम शुरू हो गया। कुल 2600 के करीब पेड़ काटे जाने थे, जिनमें 2000 से अधिक पेड़ कट भी गए थे। लेकिन मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और अदालत ने महाराष्ट्र सरकार से तुरंत पेड़ों की कटाई रोकने को कह दिया, साथ ही ये भी रिकॉर्ड मांगा कि अभी तक कितने पेड़ काटे गए हैं। हालांकि, महाराष्ट्र सरकार का कहना है कि मेट्रो के लिए उन्हें जितने पेड़ काटने थे, वह काट लिए गए हैं। आगे वह कोई पेड़ नहीं काटेंगे।

आरे कॉलोनी के जंगल से पेड़ों की कटाई को लेकर शिवसेना ने भी कड़ी प्रतिक्रिया जाहिर की थी। उसने कहा था कि केंद्र सरकार को अगर आरे कॉलोनी के जंगल की चिंता नहीं है तो उन्हें पर्यावरण बचाने को लेकर भी नहीं बोलना चाहिए। शिवसेना का कहना था कि आरे कॉलोनी के लोगों के साथ हमारे शिवसैनिक खड़े हैं। समझ नहीं आ रहा कि मुबंई मेट्रो मुंबईवासियों को अपराधी की तरह क्यों देख रही है और उनकी मांग को क्यों नहीं सुन रही है।

शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे ने इन पेड़ों की कटाई पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि जब वे सत्ता में आएंगे तो उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे जो पेड़ों की हत्या के लिए जिम्मेदार हैं। ❑

हम गोडसे के नहीं, गांधी के साथ हैं

❑ आयुष चतुर्वेदी

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक वीडियो बहुत तेजी से वायरल हुआ था, जिसमें एक किशोर छात्र गांधी के बारे में बोल रहा था–ये कौन कह रहा है कि आंधी के साथ हैं, हम गोडसे के दौर में गांधी के साथ हैं। कुछ ही मिनट के उस वीडियो ने अपनी पहुंच दूर तक बनायी। विनोद दुआ और रवीश कुमार जैसे देश के बड़े पत्रकारों ने उस वीडियो पर न सिर्फ कार्यक्रम किये, बल्कि उस छात्र की तेजस्विता पर ख्यातिनाम विद्वानों से बातचीत भी की। पता चला कि वह छात्र वाराणसी स्थित सेंट्रल हिन्दू स्कूल में ग्यारहवीं का छात्र है। मैंने आयुष से संपर्क किया और यह निवेदन किया कि वह वायरल वीडियो में बोले गये अपने विचार सर्वोदय जगत के लिए भी लिखे। आयुष ने जो लिखा, उसे हम ज्यों का त्यों आपके सामने रख रहे हैं। -सं.

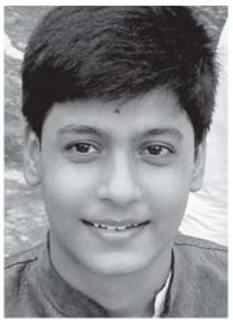

जैसा कि हम सभी जानते हैं, महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। लेकिन गांधीजी के अंदर विद्रोह का जन्म 7 जून 1893 को दक्षिण अफ्रीका के एक रेलवे स्टेशन सेंट पीटर मेरित्सबर्ग में हुआ था। हुआ कुछ नहीं था, सामान्य-सी बात थी। उस समय गोरी चमड़ी के लोगों का रुआब था और काले लोग टिकट होते हुए भी फर्स्ट क्लास में सफर नहीं कर सकते थे। नतीज़ा ये हुआ कि गांधीजी को रेलगाड़ी से बाहर फेंक दिया गया। लेकिन गांधी जी ने उस ज़ख्म को सहलाया नहीं, उसे कुरेदा और उनके अंदर एक हथियार उग आया, 'सिविल नाफ़रमानी'—ज़ालिम का कहा न मानना ही सिविल नाफ़रमानी है। और इसी के साथ एक इतिहास की शुरुआत होती है।

लुई फिशर कहते हैं कि 'अगर उस अंग्रेज़ के बच्चे को ये पता होता कि जिस आदमी को वह ट्रेन के डिब्बे से बाहर फेंक रहा है, वही आदमी एक दिन अंग्रेज़ी हुकूमत को पूरे ग्लोब से बाहर फेंक देगा तो वह ऐसी गलती कभी नहीं करता।'

बड़ी अज़ीब विडम्बना है कि गांधी के देश के लोगों ने ही गांधी को सबसे कम पढ़ा व समझा। हैरी पॉटर और चेतन भगत को दिन-रात, भोर-दुपहरी एक करके पढ़ने वाली युवा पीढ़ी ने अगर गांधीजी को तबियत से पढ़ लिया होता तो आज पीढ़ियों का सबक शायद कुछ और होता। लेकिन हमने ऐसा नहीं किया और यही कारण है कि आज हमारे पास तमाम फैंसी और फ़ेसबुकिया ज्ञान हो गए हैं। जैसे बंटवारे का शाश्वत कारण गांधीजी को मानना और गांधीजी को मुस्लिमपरस्त कह देना। मैं यह कह देना चाहता हूँ कि गांधी से बड़ा कोई हिन्दू नहीं था लेकिन गांधी के 'हे राम' से बाकी कौमें डरती नहीं थीं, क्योंकि गांधी भारत में धर्मनिरपेक्षता के प्रतीक थे।

गांधीजी का मानना था कि हमें सदैव अल्पसंख्यकों के साथ खड़े रहना चाहिए। वे कहते थे कि अगर मैं हिंदुस्तान में रहूंगा तो मुस्लिमों के साथ खड़ा रहूंगा और पाकिस्तान में रहूंगा तो हिंदुओं के साथ खड़ा रहूंगा। गांधीजी गोपालन और गौरक्षा के समर्थक थे लेकिन वे यह भी कहते थे कि अगर गाय को बचाने के लिए मुझे अपने भाई (मुसलमान) को मारना पड़ेगा तो मैं गाय को ही मर जाने दूंगा।

आज के समय में अहिंसा को कायरता और कमजोरी का प्रतीक समझा जाता है लेकिन लोग ये भूल जाते हैं कि विश्व की सबसे बड़ी सेना से आप हथियार से लड़ाई नहीं कर सकते, उसके लिए आपको एक ऐसा हथियार चुनना होगा जिसका मुकाबला वो न कर सकें और वह हथियार है—'अहिंसा और सत्याग्रह'।

गांधीजी का कहना था कि आंख के बदले आंख फोड़ने से तो पूरी दुनिया ही अंधी हो जाएगी। उनका ये भी मानना था कि ऐसी पढाई जो आपके हुनर को बढ़ावा न दे, वो बदतमीज़ी की पढ़ाई है।

गांधीजी और तमाम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों, आंदोलनों और जेल यात्राओं के फलस्वरूप 15 अगस्त, सन 1947 को हमें आज़ादी मिली और हम देशवासी गांधीजी को इतना चाहते थे कि अगले ही वर्ष उन्हें तीन गोलियां मारकर उनकी यहीं समाधि बना दी। लेकिन गांधी कभी मरते नहीं हैं, क्योंकि गांधी एक विचार का नाम है, गांधी एक व्यक्ति का नाम नहीं है और विचार सदैव जीवित रहते हैं।

एक ऐसे दौर में जब लोग लखटकिया चीजों से सराबोर हो जाना चाहते थे, उस दौर में जब गांधी ने धोती पहनी तो यही इस बात का संकेत था कि ये आदमी बाकी दुनिया से अलग है! गांधी सदैव राजशाही के ख़िलाफ़ थे। बनारस में आकर जब उन्होंने राजाओं के हीरे-जवाहरात पर सवाल उठाए तो मालवीय जी और एनी बेसेंट भी भौंचक्के रह गए।

गांधीजी की हत्या करने वाले नाथूराम गोडसे को मैं विश्व का सबसे कायर व्यक्ति मानता हूँ क्योंकि यदि उसमें थोड़ी भी वीरता होती तो वे गांधी को गोली मारने की बजाय गांधी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता और आज़ादी की लड़ाई लड़ता। मतभेदों का मतलब ये कभी नहीं है कि आप किसी की हत्या कर दें। भगत सिंह के भी गांधी से खूब मतभेद थे लेकिन उनकी गोली गांधी पर नहीं, सांडर्स पर चली थी।

अंत में दुष्यंत कुमार जी की चंद पंक्तियों के साथ अपनी बात का समापन करना चाहूंगा—

'खुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही
कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए
वो मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता
मैं बेकरार हूँ आवाज़ में असर के लिए!'
शुक्रिया! जय हिंद!! जय भारत!! ❑

निमंत्रण

वर्तमान परिस्थिति पर साहित्यकारों, पत्रकारों एवं कलाकारों का सम्मेलन

आज देश एक विषम परिस्थिति से गुजर रहा है. हम पर एक अघोषित आपातकाल थोप दिया गया है. तथाकथित राष्ट्रवाद के नाम पर अनेकों लोग या तो जेल के सीखचों के अन्दर हैं या उन पर राष्ट्रद्रोह के मुकदमे चल रहे हैं. आज देश में जितने 'राष्ट्रद्रोही' है, उतने इससे पहले कभी नहीं थे. जो सरकार के साथ नहीं हैं उन सबकी राष्ट्रभक्ति 'संदेहास्पद' मानी जा रही है. भीड़ कब किसे मौत के घाट उतार देगी, कहना मुश्किल है. इसके शिकार अब सरकारी ड्यूटी कर रहे अधिकारी भी होने लगे हैं.

पिछले दिनों प्रधान मंत्री को पत्र लिखने वाले रामचंद्र गुहा सहित 49 लोगों पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा किया गया. ऐसा लगता है कि राष्ट्रभक्ति को एक खास दल एवं संगठन अपना पेटेंट मानते हैं. नफरत और हिंसा फैलाना इनका धर्म बन गया है. वे गांधी को गाली देना प्रगतिशीलता का परिचायक मानते हैं. इसमें सत्ताधारी दल के मंत्री एवं विधायक भी शामिल हैं. 30 जनवरी 2019 को अलीगढ़ में गांधी की तस्वीर को गोली मारने, खून बहाने एवं मिठाई बांटने की घटना और फिर सूरत में बापू के हत्यारे का जन्म दिन मनाने की घटना मानवता के लिये कलंक है. पर वे इसे अपना आभूषण समझते हैं.

इन मुद्दों पर चिंतन करना तथा एकजुट होकर आगे बढ़ना, समय की मांग है. इस दृष्टि से दिनांक 23 एवं 24 नवम्बर 2019 को बापू की कर्मभूमि सेवाग्राम (वर्धा, महाराष्ट्र) में साहित्यकारों, पत्रकारों एवं कलाकारों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया है. समाज में जब-जब संकट की परिस्थिति का निर्माण हुआ है, तब-तब साहित्यकारों, पत्रकारों एवं कलाकारों ने माकूल कदम उठाये हैं. कुछ वर्ष पूर्व साहित्यकारों द्वारा सरकारी सम्मानों को वापस करना इसी की एक कड़ी है. इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु आपको हमारा विनम्र निमंत्रण है. आपकी उपस्थिति से हमारे प्रयासों को बल मिलेगा.

कृपया अपनी स्वीकृति भेजने का कष्ट करेंगे. भोजन एवं निवास की व्यवस्था निःशुल्क है. प्रवास खर्च की व्यवस्था प्रतिनिधियों को स्वयं करनी होगी. यदि हम यह कर पाते तो हमें प्रसन्नता होती पर अति सीमित संसाधनों के कारण ऐसा करना संभव नहीं हो पा रहा.

सेवाग्राम आश्रम से वर्धा एवं सेवाग्राम रेलवे स्टेशनों की दूरी करीब 10 कि.मी. तथा नागपुर एयरपोर्ट से करीब 70 कि.मी. है. सम्मेलन 23 नवम्बर 2019 को सबेरे 10.00 बजे शुरू होगा एवं 24 नवम्बर की शाम 5.00 बजे तक चलेगा.

कृपया अपने पहुंचने की जानकारी देंगे ताकि तद्नुसार व्यवस्था की जा सके.

सम्मेलन की तारीख : 23-24 नवम्बर 2019
सम्मेलन स्थल : यात्री निवास, सेवाग्राम आश्रम, सेवाग्राम, जि. वर्धा (महाराष्ट्र)
सम्पर्क : मारोती गावंडे, फ़ोन नं. 07152-284061/91, मो. 9766036396

: विनीत :

प्रो.गणेश देवी
अध्यक्ष
राष्ट्र सेवा दल

महादेव विद्रोही
अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ
मो.9428825908

गांधीजी के साथ 25 वर्ष

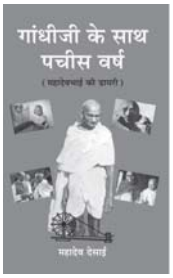

महादेव भाई और गांधीजी का संबंध दो अभिन्न हृदयों का संबंध था। महादेवभाई की डायरी का मतलब है, गांधीजी की डायरी। महादेवभाई की इन डायरियों में आपको गांधीजी की राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय नेताओं से मुलाकात मिलेगी। गांधीजी के ऐतिहासिक और जगतप्रसिद्ध व्याख्यान इन डायरियों में हैं। अगर राह चलते गांधीजी ने किसी बच्चे के साथ थोड़ा विनोद किया है, तो वह भी इन डायरियों में प्रतिबिम्बित हुआ है। इतिहास में इस प्रकार के डायरी-लेखन का नमूना सिर्फ एक ही मिलता है और वह है, अंग्रेज विद्वान वॉनसवेल का, जिन्होंने डॉ. जॉनसन के जीवन के बारे में लिखा है। लेकिन डॉ. जॉनसन के लेख और महादेवभाई की डायरियों में उतना ही अंतर है, जितना डॉ. जॉनसन और गांधीजी के जीवन में।

सन् 1917 से 1942 तक की डायरी यानी भारत के अहिंसक राष्ट्रीय आंदोलन का एक जीता-जागता दिलचस्प इतिहास। महादेवभाई ने उस समय के राष्ट्र-मानस का जो चित्र खींचा, वह अपने-आपमें एक विशेषता है।

महादेवभाई की डायरी हिन्दी सेट (10 खंड), मूल्य रुपये 850/- तथा अंग्रेजी सेट (9 खंड) मूल्य रुपये 720/- में उपलब्ध है।

बापू कथा

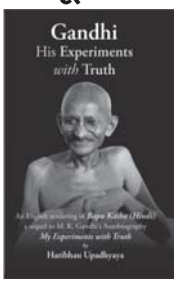

बापू ने अपनी 'आत्मकथा' एक जगह बैठकर सारे कागज सामने रखकर नहीं लिखी है। अक्सर यात्राओं में भी, जैसा प्रसंग याद आ गया, अपनी याद्दाश्त के आधार पर लिखी है। उसमें कालक्रम की पूरी रक्षा न हो पाना स्वाभाविक था। हमने इस 'बापू-कथा' में कालक्रम को भी ध्यान में रखा है। प्रसंग प्रायः वे ही चुने हैं, जो उनके प्रयोगों से, या यों कहें कि उनके जीवन-मूल्यों, आदर्शों, विचारों या आग्रहों से संबंध रखते हैं, या उन पर रोशनी डालते हैं। 1918 से 1948 तक का उनका सारा जीवन तूफानी राजनीतिक आंदोलनों, सत्याग्रहों आदि से भरा हुआ रहा; क्योंकि, बकौल खुद उन्हीं के, भारत का स्वराज्य भी उनके सत्य के प्रयोग का ही एक बड़ा अंग रहा है। इस महान प्रवाह में, बल्कि यों कहें कि बाढ़ में, उनके प्रयोग के छोटे-मोटे नदी-नाले भी आ गये हैं। उनके छोटे-बड़े जीवन-प्रयोग चलते रहे हैं, जिनसे उनका जीवन चमक उठता है, और इससे उनके उच्च गुणों तथा आंतरिक शक्तियों का पता लगता है, उनको भी महत्त्व का स्थान मिलना आवश्यक है। यह 'बापू कथा' का अंग्रेजी संस्करण है, जो रुपये 300 के मूल्य पर उपलब्ध है।

ये दोनों पुस्तकें सर्व सेवा संघ प्रकाशन ने प्रकाशित की है। ये हमारे सभी रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। आप अपना क्रयादेश सीधे सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-221001 के पते पर भी भेज सकते हैं।

–प्रकाशक

गतिविधियां एवं समाचार

आचार्य विनोबा भावे जयंती पर सर्वोदय मंडल का अभिवादन

भूदान आंदोलन के प्रणेता तथा अग्रणी सत्याग्रही आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयंती वर्ष के अवसर पर अकोला जिला सर्वोदय मंडल की ओर से कार्यक्रम किया गया। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती और विनोबा की 125वीं जयंती वर्ष के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में सर्वोदय मंडल ने खादी ग्रामोद्योग के प्रसार-प्रचार के कार्य का जिम्मा उठाया है। वरिष्ठ सर्वोदयी महादेव गुइयां, सर्वोदय मंडल के जिलाध्यक्ष बबनराव कानकिरड, सचिव डॉ. मिलिंद नेवाड़े, सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधि गुरुचरण ठाकुर, नितिन भरणी, निगांव प्रकल्प संघर्ष समिति के सचिव पाटिल मुरलीकर आदि की इस अवसर पर उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन महेश आढ़े ने किया और सर्व धर्म प्रार्थना से कार्यक्रम का समापन किया गया।

जेपी जयंती मनायी गयी

लोकनायक जयप्रकाश नारायण की 117 वीं जयंती के अवसर पर पटना सिटी में छात्र युवा संघर्ष वाहिनी और जेपी सेनानी संघर्ष समिति के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ मेहर कुमार आजाद के क्रांति गीत 'नया जमाना नई जवानी, देंगे हम अपनी कुर्बानी' के साथ हुआ। इस अवसर पर आज के संदर्भ में संपूर्ण क्रांति की प्रासंगिकता विषय पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में उपस्थित साथी वक्ता विनोद कुमार अकेला, रघुनाथ प्रसाद, सुरेश प्रसाद, सुरेंद्र प्रसाद एवं अन्य वक्ताओं ने चिंता जाहिर किया कि आज की परिस्थिति में भ्रष्टाचार और नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन तेज गति से हो रहा है इसलिए आज के संदर्भ में संपूर्ण क्रांति की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। जरूरी है कि हम सब मिलकर संपूर्ण क्रांति की गति को और तेज करें। सभी साथियों ने जयप्रकाश के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया। अंत में जेपी सेनानी संघर्ष समिति के रघुनाथ प्रसाद ने लोगों को धन्यवाद देकर सभा समाप्ति की घोषणा की।

जयंती पर याद किए गए जेपी

सम्पूर्ण क्रांति के जनक और 74 छात्र आंदोलन के नायक लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती बोकारो में मनाई गई। अध्यक्षता जयप्रकाश नारायण स्मारक समिति के वरिष्ठ साथी और बोकारो कर्मचारी पंचायत के महामंत्री रमाकांत वर्मा व संचालन सर्वोदय मित्र मंडल के जिला अध्यक्ष अदीप कुमार ने किया। लोगों ने जेपी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उनके मार्गदर्शन पर चलने का संकल्प लिया। वक्ताओं ने उनकी जीवनी व 74 आंदोलन पर प्रकाश डालते हुए आज की परिस्थिति को देखते हुए पुनः सम्पूर्ण क्रांति की आवश्यकता को महसूस किया। इस मौके पर पुण्यानंद दास, राजेश कुमार, प्रभात कुमार, रमाशंकर शर्मा, सुखदेव शर्मा, महावीर कुमार, प्रीतिरंजन दास, ज्योतिष कुमार आदि मौजूद थे।

संपूर्ण क्रांति की प्रासंगिकता विषय पर संगोष्ठी

लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती जिला सर्वोदय मंडल सीतामढ़ी के तत्त्वावधान में सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ. आनंद किशोर की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। इस अवसर पर जेपी के चित्र पर माल्यार्पण तथा पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद 'संपूर्ण क्रांति की प्रासंगिकता' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई। विषय प्रवेश कराते हुए डॉ. आनंद किशोर ने कहा कि संपूर्ण क्रांति का आदर्श स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर आधारित लोकतांत्रिक समाज के निर्माण तथा लोकशक्ति को जगाने का आदर्श है। जेपी की संपूर्ण क्रांति में सात क्रांतियों का समावेश है परंतु जिस गरीबी, भ्रष्टाचार, गैर-बराबरी, बेरोजगारी तथा अशिक्षा को लेकर आंदोलन हुआ, सत्ता बदली, उस आंदोलन से जुड़े लोग तब से अब तक पूरे देश व प्रदेशों की सत्ता में आये, आज भी हैं, बावजूद परिणाम उल्टा रहा। इन परिस्थितियों में आज संपूर्ण क्रांति के आंदोलन की प्रासंगिकता ज्यादा बढ़ गयी है।

इस मौके पर समाजसेवी विमल कुमार परिमल ने कहा कि जयप्रकाशजी का जीवन संघर्ष का पर्याय था, उनका संपूर्ण जीवन आम आदमी की समस्याओं को समर्पित था। जय किसान आंदोलन के अध्यक्ष ओमप्रकाश ने युवा शिविर की जरूरत बतायी। माध्यमिक शिक्षक संघ के पूर्व सचिव विजय कुमार शुक्ला ने कहा कि आज हमें जेपी के मूल्यों पर आमजन की समस्याओं पर संघर्ष तेज करने का संकल्प लेना है। ब्रजमोहन मंडल, दिनेशचंद्र द्विवेदी, जलंधर यदुवंशी, हरिनारायण सिंह, आफताब अंजुम, लाल बाबू मिश्र, विश्वदेव सहाय, सुरेश प्रसाद, रामबल्लभ राय, प्रो. मुरारी शरण, प्रो. विनय कुमार चौधरी, विजय कुमार पांडेय, संजीव कुमार सिंह, कुमार राजीव नयन, चंद्रदेव मंडल, संजीव झा, पिन्टू, अशोक कुमार, कवि सुरेश लाल कर्ण, महेश्वर प्रसाद, महेन्द्र ठाकुर, अशोक निराला तथा पवन कुमार चौरसिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए जेपी के रास्ते एक नये आंदोलन की जरूरत बतायी।

गांधी जयंती सप्ताह समारोह

'युवाओं और बच्चों तक गांधी विचारों को पहुंचाना मुख्य लक्ष्य है। दुनिया अच्छी कैसे बनेगी जब आपकी सोच अच्छी होगी। गांधी के सपनों का भारत व दुनिया बनाने का संकल्प लेकर निर्भय व निडर होकर सत्य के साथ खड़े हों। उन्होंने कहा कि विश्व के सभी धर्मों का संदेश एक ही है। सत्य वचन और सही काम ही गांधी दर्शन का सार है। अहिंसा, विज्ञान और अच्छे जीवन से जुड़ें, अच्छे काम में लगे रहें, गांधी जो रास्ता बनाकर गये उसी पर आगे बढ़ें।' यह विचार गांधी जयंती सप्ताह के समापन समारोह में गांधी शांति प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष एवं युवा विचारक डॉ. ओपी टाक ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर शहर काजी जनाब मोहम्मद तैय्यब अंसारी ने कहा कि विश्व में राष्ट्रपिता का ओहदा गांधी के बाद कभी किसी को नहीं मिला। युवा अपनी पहचान अलग रूप

से बनायें जिससे अच्छे कार्यों से लोग व समाज आपको पहचानें। जगदीश यादव ने कहा कि गांधी के व्यक्तित्व को समझने के लिए 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस अवसर पर सचिव डॉ. भावेन्द्र शरद जैन ने बताया कि 'गांधी-150' पर पूरे सप्ताह आयोजित कार्यक्रमों में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के युवाओं को उत्तम कार्य हेतु खादी वस्त्र एवं सद्साहित्य से सम्मानित किया गया। सोमानी कॉलेज के नवनीत सोनी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विद्यालय के हितेश कुमार, मयंक पंवार व रावल राम, डॉ. पद्मचंद, बिमल चंद, कंवर गांधी रेजीडेंसी के नरपत व हिमांशु मारू, सरस्वती बाल वीणा भारती सूरसागर स्कूल के भजनलाल विश्नोई, उम्मैन कन्या स्कूल की ओमकुमारी कल्याणी, अशोक चौधरी, संगीतज्ञ डॉ. सुनील कुमार पारीक, श्रमदान व स्वच्छता हेतु सुमन यादव व वृक्षारोपण एवं पर्यावरण में विशिष्ट योगदान हेतु वरिष्ठ कार्यकर्ता विनोद रांका सम्मानित हुए। धन्यवाद बादलराज सिंघवी ने ज्ञापित किया।

बा-बापू-150 लगातार कार्यक्रम कर रहे हमारे सर्वोदय मंडल

देश-प्रदेश में जहां तमाम वे राजनीतिक व सामाजिक संगठन भी महात्मा गांधी की डेढ़ सौवीं जयंती मनाने के लिए पदयात्राएं कर रहे हैं, जो कभी महात्मा गांधी के विरोधी थे, वहीं उत्तरांखड सर्वोदय मंडल के गांधीजन पिछले कई महीनों से बा-बापू-150 नाम पर बिना शोर-शराबे के कार्यक्रम करने में जुटे हैं।

कस्तूरबा गांधी महात्मा गांधी की सहधर्मिणी ही नहीं थीं बल्कि उनके योगदान से बापू को जीवन में दृढ़ता मिली थी। उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सुरेश भाई का कहना है कि कौसानी में बा-बापू-150 मनाने का फैसला लिया था, जिसके बाद से लगातार बापू के 18 रचनात्मक कार्यक्रमों पर संवाद किये जा रहे हैं।

इन संवाद कार्यक्रमों के जरिये प्रदेश में अधिकतर नदी घाटियों में घटते जंगलों व सूखते जल स्रोतों के विषय में समाज व सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया है। इन विषयों को लेकर गांवों में बैठकें की जा रही हैं। स्कूल कॉलेज और विश्वविद्यालयों में भी गांधी विचार पर लगातार शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। देहरादून में नून नदी के निकट खाराखेत में सत्याग्रह की ऐतिहासिकता पर शोध किया जा रहा है। कौसानी के अनासक्ति आश्रम से प्रेरणा लेकर ग्रामीण महिलाएं शादी-ब्याह में शराब परोसने, शाहखर्ची और डीजे आदि पर रोक लगा रही हैं। अस्पृश्यता निवारण, महिला अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, बुनियादी तालीम, ग्राम स्वच्छता, कौमी एकता जैसे रचनात्मक अभियान चलाये जा रहे हैं। लोक जीवन, विकास भारती, बूढ़ा केदारनाथ और लक्ष्मी आश्रम कौसानी में बापू की नयी तालीम की शिक्षा चल रही है। सर्वोदय कार्यकर्ता उत्तराखंड पंचायती राज एक्ट के मुताबिक 29 विषयों को पंचायतों को न देने, भांग की खेती को बढ़ावा देने और शराब के अंधाधुंध व्यापार से भी आक्रोशित हैं।

सुंदरलाल बहुगुणा, विमला बहुगुणा, धूमसिंह नेगी, शांतिप्रभा रावत जैसे गांधीजनों से प्रेरणा लेकर हमारे सर्वोदय मंडल समाजसेवी, शिक्षक व महिला संगठनों के साथ मिलकर सर्वोदय यात्राएं भी आयोजित कर रहे हैं। बापू की नयी तालीम के विशेषज्ञ बिहारीलाल, गांधी शांति पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध पर्यावरणविद् चंडीप्रसाद भट्ट तथा समाजसेविका राधा बहन प्रदेश में सर्वोदय कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शक हैं।

हमारे जिला स्तरीय सर्वोदय मंडल ये यात्राएं कर रहे हैं, जिनमें देहरादून में बिजू नेगी, नैनीताल में इस्लाम हुसैन, बागेश्वर में सदन मिश्रा, ऊधमसिंह नगर में देवनाथ, उत्तरकाशी में प्रेमा बघानी, पवना नौटियाल, हिमला डंगवाल, रूद्रप्रयाग में देवेन्द्र बहुगुणा, अर्चना बहुगुणा व पौड़ी में सुरेन्द्रलाल आर्य, पिथौरागढ़ में रमेश पंत, अल्मोड़ा में नीमा वैष्णव, टिहरी में साहब सिंह सजवाण, विजय जड़धारी, जयशंकर भगवान तथा चमोली में मुरालीलाल पदयात्राएं संयोजित कर रहे हैं। ❑

"लिचिंग व हिंसा से मुक्ति के लिए भारत साइकिल यात्रा"

19 अक्टूबर राजघाट, नई दिल्ली से कोलकाता, 14 नवंबर तक

जो सच्चा भारतीय है, वह तो लिंचिंग और हिंसा के विरुद्ध ही रहेगा। महात्मा गांधी ने कहा कि मैं खुद गाय की सेवा चाहता हूं, मगर गाय के नाम पर किसी की भी हत्या को सही नहीं ठहरा सकता। गांधीजी कहते हैं कि यदि हम सब बूढ़ी, कमजोर, बीमार गायों की सेवा करें तो यही सच्ची गो-सेवा होगी। हमारा मानना है कि किसी भी बहाने से मानव हत्या को जो भी सही ठहरायेगा, वह समाज के लिए बीमारी है। हमारा देश, जिसकी मूलभावना सहिष्णुता है, वह ऐसे हिंसक विचार के विरुद्ध ही रहेगा।

"लिचिंग और हिंसा मुक्त भारत साइकिल यात्रा" 29 अक्टूबर से 14 नवंबर तक दिल्ली से कलकत्ता तक चलेगी। इस पूरी यात्रा में हमें विश्वास है कि हर सच्चे भारतीय का सहयोग मिलेगा। हम सबसे पहले खुद को सुधारेंगे और लिंचिंग जैसे पाप से खुद को दूर रखेंगे और इस दूषित मानसिकता से सभी को बचायेंगे, हम सब मिलकर एक खुशहाल समाज बनायेंगे।

दिल्ली से हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, प. बंगाल होते हम पूरे रास्ते गांव, शहर, स्कूल, कॉलेज, चौपाल, चौराहों, गलियों में जनसंपर्क, बैठकें, चर्चा, गोष्ठियां, पर्चा-वितरण करते हुए कलकत्ता के गांधी भवन बेलिया घाट पहुंचेंगे, जहां गांधीजी ने खुद रुककर साम्प्रदायिकता और नफरत के खिलाफ अपना अभियान शुरू किया था, जिसमें उन्हें अपनी जान की बाजी भी लगानी पड़ी।

आइये, हम और आप मिलकर लिंचिंग और हिंसा जैसे पाप को रोकें और धर्म के मूल संदेश प्रेम, करुणा, त्याग, सहिष्णुता और समर्पण को फिर फैलाकर अपने आप की तरफ लौटें।

–खुदाई खिदमतगार, सद्भावना संगम
आईसीएएन, एनएपीए, एसपीआई

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

2020 की सर्वोदय दैनन्दिनी (डायरी) प्रकाशित

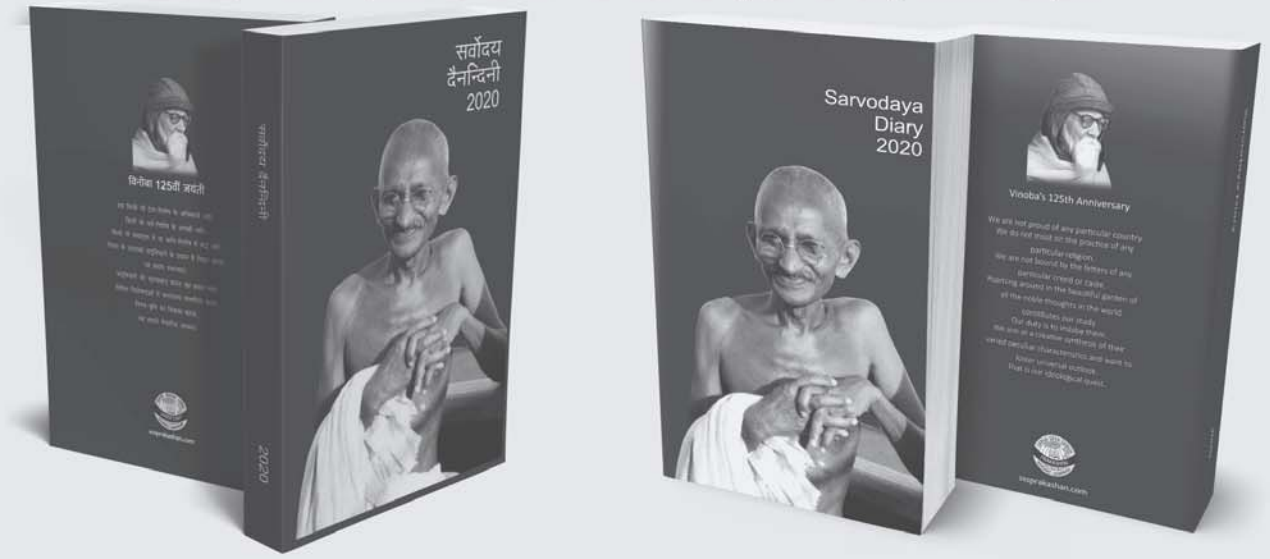

आप जानते ही हैं कि विगत कई वर्षो से सर्व सेवा संघ प्रकाशन **'सर्वोदय दैनन्दिनी'** नाम से डायरी प्रकाशित करता आ रहा है। इस वर्ष भी गांधी जयंती **2 अक्टूबर** के अवसर पर 2020 की **'सर्वोदय दैनन्दिनी' एवं Sarvodaya Diary** प्रकाशित हो गयी है। इसकी विशेषताएं इस प्रकार हैं :

'सर्वोदय दैनन्दिनी :2020' के प्रत्येक पृष्ठ पर गांधीजी की ज्ञानवर्धक व जीवनोपयोगी सूक्तियां (हिन्दी व अंग्रेजी में) दी गयी हैं। सर्व सेवा संघ के पदाधिकारियों, समितियों व सर्वोदय मंडलों तथा देशभर की गांधी संस्थाओं के पते व संपर्क नंबर भी दिये गये हैं। नये वर्ष का कैलेंडर तथा प्लानर के कुछ पृष्ठ अलग से रखे गये हैं। इसमें सर्व धर्म प्रार्थना भी शामिल की गयी है। डायरी का आवरण पृष्ठ अत्यधिक आकर्षक, रंगीन व जिल्द बाइंडिंग तथा रोचक साज-सज्जा के साथ अच्छे कागज पर ऑफसेट द्वारा सुन्दर छपाई है।

उल्लेखनीय है कि **वर्ष 2020 गांधीजी की 150वीं तथा विनोबा की 125वीं जयंती** का वर्ष है। यह हम सबके लिए एक विशेष अवसर है। गत वर्षों की भांति **'सर्वोदय दैनन्दिनी'** डबल डिमाई साइज में छापी गयी है। कागज, छपाई, बाइंडिंग आदि की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि होने के बावजूद भी इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर सर्वोदय दैनन्दिनी : 2020 की कीमत पिछले वर्ष की भांति **रुपये 170/-** ही निर्धारित है।

डायरी विक्रेता एवं भेंट देने वाले शुभचिन्तकों, गांधीजनों व सर्वोदय विचार प्रेमी साथियों से अनुरोध है कि अग्रिम क्रयादेश शीघ्र भिजवायें ताकि हम समय से आपको डायरी की आपूर्ति कर सकें।

आपूर्ति के नियम

1. 1 से 50 डायरी मंगाने पर 25% कमीशन देय होगा, ट्रांसपोर्ट द्वारा भिजवाने के खर्च का आधा एवं डाकखर्च ग्राहक को देना होगा।
2. 51 से 200 डायरी मंगाने पर 30% कमीशन देय होगा। ट्रांसपोर्ट द्वारा भिजवाने के खर्च का आधा एवं डाकखर्च ग्राहक को वहन करना पड़ेगा।
3. 201 से 300 डायरी एक साथ खरीद करने पर 35% कमीशन दिया जायेगा। ट्रांसपोर्ट द्वारा भिजवाने के खर्च का आधा एवं डाकखर्च ग्राहक को वहन करना पड़ेगा।
4. 301 से अधिक डायरी मंगवाने पर 40% कमीशन एवं स्टेशन पहुंच की सुविधा दी जायेगी। ट्रांसपोर्ट द्वारा भिजवाने का आधा खर्च ग्राहक को देना होगा।
5. बिकी हुई डायरी वापस नहीं ली जायेगी।
6. डायरी की बिक्री पूर्णतया नकद, बैंक के मार्फत होती है।
7. आर्डर भिजवाते समय अपना नाम/पता/मोबाइल नंबर और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम साफ-साफ लिखें।
8. डायरी का आर्डर भिजवाते समय 25% रकम अग्रिम भिजवायें। डिमाण्ड-ड्राफ्ट 'सर्व सेवा संघ प्रकाशन' के नाम भेजें।
9. रेलगाड़ी की सुविधा नहीं होने पर ट्रांसपोर्ट से पार्सल भेजने के लिए प्रकाशन स्वतन्त्र होगा।

नोट : रेलवे के असुविधाजनक नये नियमों के कारण पार्सल ट्रांसपोर्ट से मंगाना बेहतर होगा। समुचित अपेक्षा के साथ!

अरविन्द अंजुम, संयोजक

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।